रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 6 अंक 1, जनवरी 2022

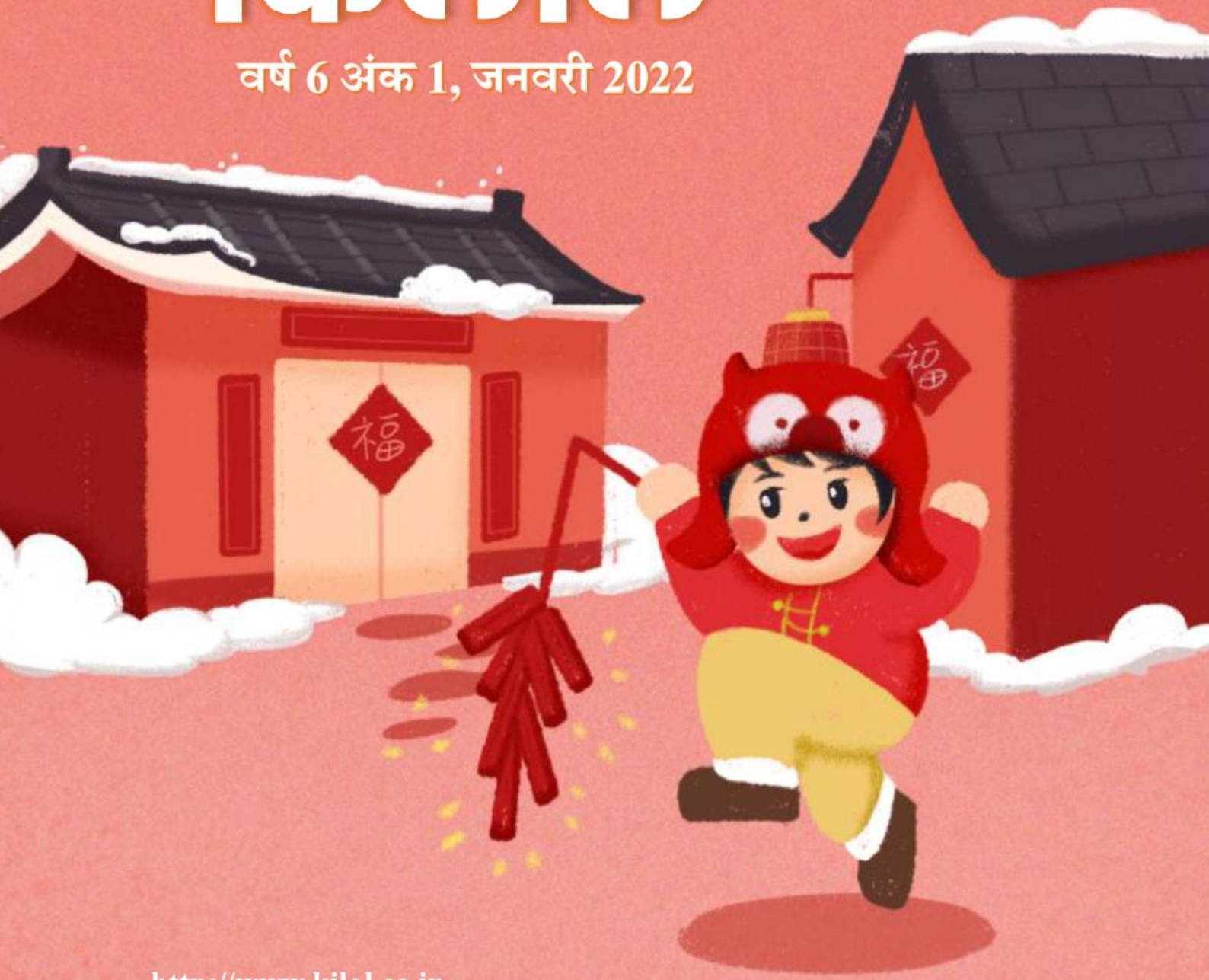

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

हम सब एक और नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं. नए वर्ष की शुरुआत में हमें पिछले वर्ष के हमारे कार्यों की समीक्षा करनी चाहिए. आगे आने वाले वर्ष के लिए हमें कुछ संकल्प भी लेने चाहिए. हमें अपने स्वभाव में व्यवहार में भी परिवर्तन लाने हेतु कुछ संकल्प लेने चाहिए. आप इस वर्ष क्या कुछ नया करना चाहेंगे? आपकी इस वर्ष के लिए क्या योजनाएँ हैं? पिछले वर्ष क्या क्या अच्छा हुआ और किन-किन क्षेत्रों में सुधार करना चाहेंगे, इस सबके लिए यह सबसे अच्छा समय है.

हम चाहेंगे कि पढ़ने, लिखने और गणित में हम सब मिलकर आगे बढ़ें; बहुत अच्छा करें. वर्ष 2022 हम सबके लिए शुभ हो.

आपका

आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

बचपन की वे बातें 7

शरद ऋतु 8

गुनगुनी भोर 9

पंचतंत्र की कथाएँ.....10

हमर भाषा 12

मधुमक्खी.....13

सड़क.....14

अधूरी कहानी पूरी करो 15

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 16

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 17

कभी खुशी कभी गम.....18

संविधान, भारत का परिचय 20

स्वयं को बेहतरीन बनाइए.....23

लोग क्या सोचेंगे 25

जीवन रूपी चाय 27

धैर्य रखिए 28

पर्यावरण 30

ज्ञान की बाते.....32

प्रसन्नता देने में है लेने में नहीं.....34

फक्र.....35

21 वीं सदी की नारी.....37

आई सर्दी 40

राजभाषा.....42

वीरांगना झलकारी बाई 44
मेरे बिलासपुर में 46
चिड़िया 48
राष्ट्रीय चिन्ह 49
मन की शक्ति 51
जाड़ के दिन आगे 52
सफाई वाले 54
ले आई छब्बीस जनवरी 55
किसका कार्य 56
बंदर जी 58
रविवार का दिन 59
हमारे प्रेरणास्रोत 60
पहाड़ों से आ गई सर्दी 62
गड़रिया और खज़ाना 63
शरद आगमन 65
स्वयं प्रेम 66
गाँव की भोर 68
केवट और साँप 70
प्यारा लगता मोर 71
पुस्तकें हमारी मार्गदर्शक 72
काले बादल 73
माथे का चंदन 74
सफेद दाग 75
सोनू मोनू 76

स्नेह व्यवहार.....77
बालपन.....78
हाय रे मोबाइल.....80
गणित की रोचक बाल पहेलियाँ.....81
सूरज दादा.....82
गरम-गरम समोसे.....83
किसान.....84
माँ तेरे हाथों से बना स्वेटर.....85
अनजाने पौधे.....86
नववर्ष मनाएँ.....87
बच्चे मन के सच्चे.....88
प्रेरणा जीवन की.....89
कौवा और हौवा.....90
पापा और मुनिया.....92
मोर बचपन अउ स्कूल.....94
माँ का प्यार.....96
ठंड का मौसम.....98
ठंड.....100
हमारे आदर्श.....101
कैसे हम नूतन वर्ष मनाएं?.....102
मुलाकात.....104
गीताली.....105
आजादी.....106
बेटा बेटी दोनों समान.....108

किस्मत के भरोसे मत बैठो 110
नाम है उसका...? 111
नमन 113
जीवन 114
मिठू जी की शादी में 115
मेरी मम्मी 116
थैला 117
गौरैया 118
बरसात 119
फिर दिल ने उनको पुकारा है 121
नव वर्ष मनाये 123
अथक परिश्रम 125
जाड़ अउ कुहरा 127
गिनती 128
बगिया लगती मालामाल 129
इठलाती धूप 130
कौआ और बिल्ली 131
आओ हम अभिनन्दन करें 133
आओ कुछ तन मन दान करें 135
ओ बचपन की मीठी यादें 137
आई है शरद ऋतु 139
हमारी देवनदी गंगानदी 140
संस्कार 141
अगले जनम मोहे नारी ही कीजो 142

आपके यूँ चले जाने से 143
नए साल में हुआ धमाल.....147
चिड़िया रानी 148
भारत माता 149
क्या वक़्त था.....151
भारत 153
तिरंगा.....155
जीवन.....156
संविधान 157
सुंदर पुष्प.....159
तितली 160
दो बिल्लियाँ 161
चित्र देख कर कहानी लिखो 163
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी.....163
योगेश्वरी तम्बोली द्वारा भेजी गई कहानी 164
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 165

बचपन की वे बातें

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

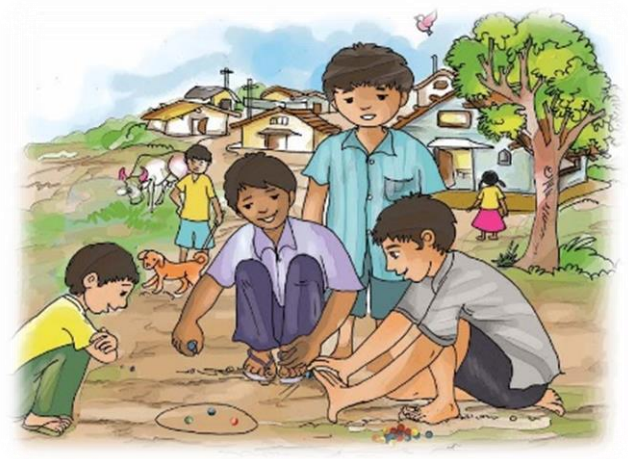

बचपन की वे बातें ही तो, जीवन की अनमोल पूंजी है.
छुटपन में खेलते-खेलते, हमनें खुशी-खुशी जो सहेजीं हैं.

मित्रता निभाना रिश्ते निभाना और सीखा फर्ज निभाना.
पढ़ना सीखा, लिखना सीखा, सीखा मिल बांटकर खाना.

नानी की कहानियाँ और दादी की शहद सी मीठी जुबानियां .
महाभारत की कथा हो या, पंचतंत्र की मनोहर कहानियाँ.

सबसे सीखीं हमनें संघर्ष करते-करते आगे बढ़ने के तरीके.
नीति- नियम, शिष्टाचार और जिंदगी जीने के कई सलीके.

बचपन की सीखी बातें ही हमें, जीवन भर याद रह जाते हैं.
जब कभी हम निराश होते हैं, यही हमारे हौसले बढ़ाते हैं.

*****

शरद ऋतु

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

बीत गई है बरसा ऋतु,
शरद ऋतु अब आई है,
सुबह शाम शीत बरसाने,
ठंड ने पैठ जमाई है.

कोहरा और धुंध बरसते,
शरद् ऋतु के मौसम में,
गरम वस्तुएं गरम कपड़े,
खूब भाते इस मौसम में.

सुबह सवेरे तकते रहते,
कब आयेगी धूप सुहानी,
अलाव जलाकर बच्चे सारे,
दादा जी से सुनते कहानी.

रेनकोट और छतरी की,
हो गई अब तो बिदाई,
स्वेटर, कंबल, मफलर, टोपी,
इन सबकी बारी आई.

*****

गुनगुनी भोर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

हुई गुनगुनी भोर, शीत धरती पर आयी,
खुली सबेरे आँख, ठंड देखो मुस्कायी.

सुंदर लगते मेघ, पक्षी पंख फैलाते,
करते सारे शोर, भोर जल्दी उठ जाते.

लगी गुनगुनी भोर, धरा मोती बन जाती,
पौधे पत्ती फूल, खुशी से वह इठलाती.

पुरवाई की शोर, सभी कानों में घुल जाती,
धीमी-धीमी ठंड, हमें छू कर है जाती.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ

ब्राह्मण और तीन ठगों की कथा

नीति कहती है कि यदि अनेक व्यक्ति असत्य वचन बार-बार कहें तो वह सत्य प्रतीत होने लगता है. इस पर एक सुंदर कथा पंचतंत्र में कही गई है. वही कथा तुम्हें सुनाता हूँ.

एक गाँव में एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे .आस-पास के गाँव में अपने यजमानों के यहाँ पूजा- कथा, हवन, यज्ञ आदि संपन्न कराते, जो दक्षिणा प्राप्त होती उससे संतोष-पूर्वक अपनी जीविका चलाते. एक बार समीप के गाँव में उन्होंने पूजा करवाई. यजमान ने उन्हें पर्याप्त अन्न, वस्त्र और द्रव्य तो दिए ही साथ ही एक स्वस्थ और सुंदर बछिया भी दी. ब्राह्मण प्रसन्न मन हो अपने निवास ग्राम की ओर चले. बछिया थक न जाए यह सोचकर उसे उन्होंने अपने कंधे पर उठा लिया.

मार्ग में तीन ठग एक स्थान पर बैठे हुए थे. दूसरों का धन छलपूर्वक हड़प लेना ही उनका व्यवसाय था. ब्राह्मण के साथ सुंदर बछिया को देखकर उनका लोभ जागृत हो उठा. उन्होंने निश्चय किया कि येन- केन- प्रकारेण यह बछिया इस ब्राह्मण से छिन ही लेनी है. वे तीनों छुपकर अन्य मार्ग से आगे की ओर चले गए.

उनमें से पहला ठग मार्ग में ब्राह्मण के साथ हो लिया और उनसे वार्तालाप करने लगा. उसने कहा, "हे ब्राह्मण देवता! मुझे आपसे यह पूछते बड़ा संकोच हो रहा है कि आप जैसा कुलीन और ज्ञानवान ब्राह्मण इस मृत श्वान को अपने कंधे पर क्यों उठाए हुए है?"

यह सुनते ही ब्राह्मण ने कहा, "ऐसा प्रतीत होता है तुम्हारी दृष्टि मंद पड़ चुकी है, तभी यह सुंदर बछिया तुम्हें श्वान के रूप में दिखाई पड़ती है."

दुष्ट ठग ने विनम्र होने का अभिनय करते हुए कहा, "आपका कथन उचित ही होगा महाशय! मैं मूढ़मति अधिक क्या समझूँ? ऐसा कहते हुए उसने अपना मार्ग बदल लिया.

कुछ समय उपरांत दूसरा ठग भी मार्ग में ब्राह्मण से मिल गया. अपना छद्म परिचय देते हुए उसने ब्राह्मण की प्रशंसा की और कहा, "महाशय! यदि आप मुझे क्षमादान दें तो अपने मन का एक संशय आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ."

ब्राह्मण ने कहा, "अवश्य".

उसने कहा, " आप जैसा पवित्र व्यक्ति भला किस प्रयोजन से मृत श्वान को अपने कंधे पर लिए भ्रमण करता है."

पुनः ऐसा सुनते ही ब्राह्मण क्रोध से भर उठा. किंतु वचनबद्ध होने के कारण अपने क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए कहा, "ऐसा असत्य वचन कहने में तुम्हें लज्जा क्यों नहीं होती? मैं ऐसा विचार कर विस्मित होता हूँ. एक बछिया तुम्हें श्वान दिखाई पड़ती है. यह कैसा आश्चर्य है?"

उस व्यक्ति ने क्षमा मांगी और कुछ समय साथ चल कर उसने भी अपना मार्ग बदल लिया.

किंतु अब ब्राम्हण को स्वयं पर संशय होने लगा. उसने बछिया को कंधे से नीचे उतारा और ध्यानपूर्वक उसे देखा. आश्वस्त हुआ कि यह श्वान नहीं है और मृत तो कदापि नहीं. यह विचार करते हुए मार्ग में आगे बढ़ गया.

कुछ समय ही व्यतीत हुआ. तीसरा ठग सामने से आता दिख पड़ा. उसने ब्राम्हण के समीप पहुँचकर कहा, "अहो! आप यह कैसा अनर्थ कर रहे हैं? हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! इस मरे हुए श्वान से आपको दुर्गंध नहीं आती? आपको इस दशा में जो भी देखेगा आपका उपहास ही करेगा. ऐसा प्रतीत होता है अत्यधिक श्रम के कारण आपका मतिभ्रम हो गया है, अन्यथा आप ऐसा कार्य कदापि ना करते."

ब्राह्मण से अब ना रहा गया. उसने तत्काल बछिये को कंधे से उतारकर मार्ग में ही छोड़ दिया. वह मन ही मन विचार करने लगा कि अवश्य ही मुझे मतिभ्रम हुआ है अन्यथा सभी व्यक्ति एक ही बात क्यों करते?

स्वयं की बुद्धि पर भरोसा न रखने वाले व्यक्ति ऐसे छल-प्रपंच के कारण प्रायः अपना धन गँवा देते हैं.

*****

हमर भाषा

रचनाकार- निहारिका झा

हम सबने ये ठाना है,
भाषा को सबल बनाना है.

बोलें हिंदी में हर बात,
तब बनेगी हिंदी खास.

हम सबकी है यह तैयारी,
हिंदी बने सबकी दुलारी.

हां हमको हिंदी से प्यार,
हिंदी में करें हर व्यवहार.

आखर आखर बनहि शब्द,
शब्द ले बनहि शब्द भण्डार.

*****

मधुमक्खी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

बाग-बाग मैं मड़राती हूँ,
मधुमक्खी मैं कहलाती हूँ.

रंगबिरंगे फूल मुझे प्रिय,
उनका रस मेरा आहार.

मैं नुकसान न पहुँचाती हूँ,
मन से प्रकट करूँ आभार.

फूल-फूल का रस लाती हूँ,
रस को रखती हूँ छत्तों में.

जिसको नन्हे-मुन्ने पीते,
शहद तो मुझको भी भाता है.

छत्तों में हर मौसम बीते,
श्रम से शहद बना पाती हूँ.

शहद बड़ा पौष्टिक गुणकारी,
इसका मीठा-मीठा स्वाद.

मधुमक्खी-पालन का धंधा,
जो करता, होता आबाद.

मंत्र धनार्जन बतलाती हूँ,
मधुमक्खी मैं कहलाती हूँ.

*****

सड़क

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी

सड़क बनी है लंबी चौड़ी,
उस पर जाती मोटर दौड़ी.

सड़क पार जो करना चाहो,
देखो मोटर आती ना हो.

दाएं देखो बाएं देखो,
फिर सड़क तुम पार करो.

लाल बत्ती देख रुकना,
पीली बत्ती इंतजार करना.

जब देखे हरी बत्ती,
झटपट गाड़ी तुम बढ़ाना.

सड़क नियम का पालन करना,
और सब को सुरक्षित रखना.

सड़क बनी है लंबी चौड़ी,
जिस पर जाती मोटर दौड़ी.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी –

घमण्डी ऊँट

एक गाँव में एक बढ़ई रहता था. वह बहुत गरीब था. गरीबी से तंग आकर उसने लकड़ियाँ काटकर बेचने की सोची. जब वह जंगल गया तो वहाँ उसने देखा कि एक ऊँटनी प्रसवपीड़ा से तड़प रही है. ऊँटनी ने जब बच्चे को जन्म दिया तो बढ़ई उँट के बच्चे और ऊँटनी को लेकर अपने घर आ गया. ऊँटनी को खूँटी से बाँधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया. ऊँटनी ने हरी-हरी कोमल कोंपलें खाईं. बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊँटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई. ऊँट का बच्चा भी बढ़कर तंदुरुस्त हो गया. बढ़ई ने उसके गले में एक घंटा बाँध दिया, जिससे वह कहीं खो न जाए.

ऊँटनी के दूध से बढ़ई के बाल-बच्चे भी पलते थे. ऊँट भार ढोने के भी काम आने लगा.

उस ऊँट-ऊँटनी से ही उसका व्यापर चलता था. यह देख उसने कुछ धन उधार लेकर एक और ऊँटनी खरीद लाया. उसके पास अनेक ऊँट-ऊँटनियां हो गईं. उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया. बढ़ई का व्यापार चमक उठा.

शेष सब तो ठीक था, किन्तु जिस ऊँट के गले में घंटा बँधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था. वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था. सब ऊँट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह अकेला ही जंगल में घूमा करता था.

उसके घंटे की आवाज़ से सबको यह पता लग जाता था कि ऊँट किधर है. सबने उसे मना किया कि वह गले से घंटा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना.

एक दिन जब सब ऊँट वन में पत्ते खाकर तालाब से पानी पीने के बाद गाँव की ओर वापिस आ रहे थे, तब वह सब को छोड़कर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया. शेर ने घंटे की आवाज सुनकर उसका पीछा किया.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

शेर को अपनी ओर आते देख ऊँट घबरा गया. वह सोचने लगा कि आज मुझे शेर अपना शिकार बना ही लेगा. मेरे साथियों ने घंटा उतारने की सलाह ठीक ही दी थी. लेकिन मैं अपने को दूसरे से विशेष समझता था. अब मैं इस घंटे की वजह से छुप भी नहीं सकता. मुझे आज अपनी जान गँवानी होगी. अपने किए कार्य पर प्रायश्चित करते हुए मन ही मन अपने साथियों से क्षमा याचना कर, अलविदा साथियों कहते हुए, आँखें बंद कर ईश्वर को याद करने लगा.

शेर ने ऊँट का शिकार करने के लिए छलांग लगाई. उसी समय वृक्ष पर बैठे शिकारी ने शेर को तीर से घायल कर दिया. शेर धरती पर गिर गया और फिर अपनी जान बचाने दूर भाग गया. आवाज सुनकर ऊँट ने आँखें खोलीं. यह क्या? शेर मुझे खाने की बजाय दूर भाग रहा है.

शिकारी को देखकर ऊँट समझ गया कि मुझे शेर के चंगुल से बचाने वाला यह शिकारी ही है. शिकारी को अपनी जान बचाने का बहुत-बहुत धन्यवाद दिया. ऊँट को समझ आ गया था कि इस घंटी की वजह से ही शेर आज मेरा शिकार कर रहा था. ऊँट ने घंटी निकालकर फेंक दी. अपने साथियों से मिलकर इस घटना को बताते हुए क्षमा माँगी.

अब सभी आपस में मिल जुलकर खुशी से रहने लगे.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

रोहन का टॉमी

आखिर वही हुआ जिसका रोहन को डर था. बात यह थी कि रोहन की बहुत दिनों से कुत्ते का एक पिल्ला पालने की इच्छा थी, पर उसके पापा इसके लिए तैयार नहीं थे.

पापा को किसी भी तरह का जानवर पालने से चिढ़ थी. रोहन अपने खाली समय में साथ खेलने के लिए एक पिल्ला पालना चाहता था. हुआ यह कि एक दिन स्कूल से घर आते समय रास्ते में रोहन को एक छोटा सा पिल्ला मिल गया. प्यारा छोटा सा पिल्ला देखकर रोहन उसके साथ खेलने लगा और फिर वह पिल्ला रोहन के साथ-साथ घर तक आ गया.

रोहन ने पापा की नजरों से बचाने के लिए पिल्ले को छिपाकर रख लिया, उसने पिल्ले का नाम टॉमी रख दिया था. पर मम्मी से वह टॉमी को छिपा नहीं पाया.

मम्मी ने रोहन की इच्छा जानकर उसे कुछ नहीं कहा और टॉमी को घर में रखने की बात मान ली. पर अब दोनों की चिन्ता यह थी कि पापा को टॉमी के बारे में कैसे बताएँ और उन्हें कैसे मनाएँ.

एक सप्ताह का समय बीत गया. पापा को टॉमी के बारे में पता नहीं चला. पर रविवार को पापा के ऑफिस की भी छुट्टी थी और वे घर पर ही थे. पापा ने रोहन को टॉमी के साथ खेलते देख लिया और उनका मूड बिगड़ गया.

सोमवार को सुबह ऑफिस जाने के पहले पापा, मम्मी से कुछ बात कर रहे थे. रोहन को लगा कि पापा शायद टॉमी को घर से निकालने की बात कह रहे होंगे. रोहन ने छिपकर सुनने की कोशिश की लेकिन वह पूरी बात समझ नहीं सका. पर उसे लगा कि पापा नाराज हो रहे थे और मम्मी उन्हें समझाने की कोशिश कर रही थीं.

इसके आगे क्या हुआ होगा? आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और 15 जनवरी 2022 तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

पूरी की गई श्रेष्ठ कहानियों को हम किलोल के आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे.

*****

कभी खुशी कभी गम

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

कभी खुशी कभी गम, यही तो है जीवन के रंग,
जब हो जाता गम से अति व्याकुल मानव,
तब उठा ले यदि कोई अनुचित कदम,
हो जाता है तब उससे जुड़ा हर जीवन बेरंग.

कभी खुशी कभी गम, यही तो है जीवन के रंग.
क्यों एक सतही दुख से दुखी हो अपना आपा खुद से खो देता,
हो जाता अनमोल जीवन से हताश, उस परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति ऐ मानव.
कर देता पागल हो, खुद के साथ अपनों का भी जीवन बेरंग.

कभी खुशी कभी गम, यही तो है जीवन के रंग.
यदि जीवन कोई गम ही ना हो तो,
हो जाएं तब जीवन पूरा कोरा कागज.
यदि हो ना कोई खुशी की चमक किसी आँख में,
तब हो जाएं गम से काला हर जीवन.
क्यों देख नहीं पाता नादान इंसान मन की आँखों से,
श्वेत श्याम रंगों में छुपे जीवन के इंद्रधनुषी रंग.

कभी खुशी कभी गम, यही तो है जीवन के रंग.
जब घिर जाओ तुम जीवन में नाउम्मीदी की काली रातो में,
तब चुप बैठ जाओ एक कोने में,
अपनी आँखे मुंद उस अँधेरे में अपनी अश्रुओं की धारा में,
विसर्जित कर दो अपनी, सारी पीड़ा, सारे गम.
जब तक बरस कर खाली ना हो जाएं गम के बादल.
तब इन्ही रिक्तियों में भर पाओगे तुम पुनः,
जीवन में आशाओं के चटक रंग.

कभी खुशी कभी गम, यही तो है जीवन के रंग.
यूँ ही कई बार किया है अपने को शून्य तक रिक्त,
मैंने स्व अनुभव से सीखा है जीवन में कोई ऐसा नहीं रंग,
जिसके ऊपर चढ़ सके नहीं कोई दूजा रंग.
क्योंकि जब कैनवास पूरा काला हो जाएं,
तब ही सबसे खूबसूरत रंगीन चित्र उधरते देखा मैंने,
प्रबल उम्मीदों के चटक रंग के संग.

*****

संविधान, भारत का परिचय

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

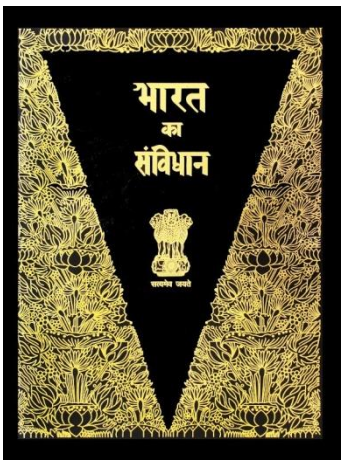

भारत ने 1949 मैं संविधान को अपनाया,
संविधान दिवस राष्ट्रीय कानून के रूप में मनाया,
डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सबसे बड़ा संविधान तैयार किया,
और जिसके हकदार थे हम, वह अधिकार दिया.

लगभग 2 साल 11 महीने और 17 दिन, मैं हुआ संविधान तैयार,
26 नवंबर को कर लिया इसको स्वीकार,
विभिन्न वर्गों के बीच, अंतर को कर दिया बराबर,
कर दिया इसका अंत, समानता को प्रदान कर.

हमारे भारत के संविधान का मुखौटा,
ना इसमें कोई बड़ा, ना तो कोई छोटा,
पूरे देश के नागरिक है एक समान,
आज भी उसे लागू ना करके, कुछ लोग कर रहे हैं अपमान.

इस संविधान ने रखा है देश को एकजुट,
देश की तरक्की के लिए, है यह सबसे महत्वपूर्ण,
26 जनवरी 1950, मैं यह प्रभाव में आया,
हमारे भारत में, यह गणतंत्र दिवस लाया.

समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, अखंडता को जोड़ा,
प्रगति की आवश्यकता को हमारे संविधान ने किया पूरा,
पर दुख इस बात का, अभी भी बहुत से लोगों को नहीं है इसकी जानकारी,
और कहते हैं गरीब जनता बेचारी.

चलो जानते हैं क्या है संविधान,
बचाए और करें सभी का सम्मान,
पढ़े और समझे, हमारे सभी अधिकार,
बहुत सारी मुश्किलों के बाद, हुआ यह हमारे लिए स्वीकार.

भीमराव अंबेडकर जी का करें धन्यवाद,
उनकी वजह से हम हैं, असमानता से आजाद,
296 लोगों ने मिलकर लगाई सविधान की जड़े,
इसे पढ़कर और समझकर, हम भी आगे बढ़े.

संविधान सिर्फ एक किताब नहीं,
इसमें सरकार के दायरा तय करने वाली, हर एक बात है कही,
संविधान का उल्लंघन, करने की किसी को नहीं है आजादी,
वरना वह कहलाएगा, एक अपराधी.

हमारे देश के, हर एक नागरिक को इसके बारे में जानना चाहिए,
इसके हर एक पन्ने को समझ कर, सभी को समझाइए,
चलो आज ही पढ़ते हैं, हमारे संविधान की किताब,
सम्मान, समानता, यह सभी है हमारे अधिकार ना की एक ख्वाब.

इसमें दिया है, सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक रूप से, हर एक को एक जैसा अवसर,
बंधुत्वता को बढ़ाने के लिए, नहीं छोड़ी कोई कसर,
हमारा देश, नहीं है किसी के अधीन,
समाज के कल्याण के लिए, काम कर रहा है यह हर दिन.

हम सभी को है 18 साल के बाद, अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार,
सभी के वोट का महत्व है बराबर और स्वीकार,
एक मजबूत राष्ट्र, हम सब मिलकर बनाते हैं,
इंसानियत, संविधान, शिक्षा के बारे में, सभी पढ़ते और पढ़ाते हैं.

हर नागरिक को बुनियादी हक देने वाला संविधान,
सभी को मिलता है, इसमें अवसर एक समान,
किसी की मानहानि किए बिना, हर व्यक्ति अपनी बात रख सकता है,
बहुत सी बातें, हमारा भारतीय संविधान कहता है.

तोड़ दी परंपराएँ, करें सारे बदलाव,
हमारे संविधान ने, मिटा दिए बहुत से घाव,
हमारे राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत को इसमें दर्जा मिल गया,
दुनिया का सबसे बड़ा संविधान, भारत का संविधान बन गया.

*****

स्वयं को बेहतरीन बनाइए

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

एक जिंदगी है, दूसरे जन्म का हमें कोई पता नहीं.

इतना तो पता है कि हमें अपनी जिंदगी प्रसन्नतापूर्वक, सकारात्मक सोच, अच्छे व्यवहार के साथ और प्रेम से व्यतीत करनी चाहिए. जिंदगी में उतार-चढ़ाव, मुश्किलें परेशानियाँ तो आती ही रहेंगी. अगर दुख नहीं होगा तो फिर हमें सुख में आनंद कैसे आएगा, अगर रोना नहीं आएगा तो फिर खुशी में हँसी कैसे आएगी, जिंदगी बहुत ही नीरस सी नहीं हो जाएगी?

जिंदगी में कोई भी बाधा आए, परेशानियाँ आएँ, तकलीफ आए, अपनी सारी ऊर्जा परेशानियों पर लगाने की जगह हमें यह याद रखना चाहिए कि अब हमने क्या सीखा और अपनी ऊर्जा हम अपने आप को बेहतर बनाने में लगाएँ. कहना बहुत आसान है, लिखना भी, पर जिंदगी में रोना, हार मान जाना यह उससे भी ज्यादा आसान है, मुश्किल है तो बाद में यह सोचना कि हमने अपना समय, रोने में, किसी पर इल्जाम लगाने में और जिंदगी को पहचानने में व्यर्थ कर दिया है.

अगर इसी तरह जिंदगी जीनी है तो क्यों न मुश्किल का सामना पहले ही कर लिया जाए?

जब भी हम बहुत ही खुश हों, बहुत गुस्से में हों, तब कोई निर्णय न लें, उस ऊर्जा का उपयोग कोई न कोई कार्य करने में करें, हमारा कार्य जरूर सफल होगा.

इस जिंदगी में, अगर हम देखें, तो हम पाएँगे कि हमने यह जीवन, अनुभव पाने, कुछ नया सीखने और अपने आप को बेहतरीन बनाने के लिए ही लिया है. बेहतर बनने का मतलब यह नहीं कि लोग हमारी सराहना करें,

इसका मतलब यह है कि, हम अंदर से अपने आप को प्रसन्नता से भरा हुआ महसूस करें, संतुष्ट महसूस करें, ऊर्जावान महसूस करें और बहुत ज्यादा आत्मबल स्वयं में हो.

उम्मीद कभी न छोड़िए, अपने आप को हर क्षेत्र में बेहतर बनाइए, जिसमें आप प्रसन्न महसूस करते हैं.

खेलकूद, संगीत, नृत्य, शिक्षा या कोई आविष्कार करें, स्वयं को पसंद करें, स्वयं से प्रेम करें, सबसे पहले स्वयं का सम्मान करें, अपना काम समय पर करें, लोगों को खुश करने की जगह, पहले स्वयं की खुशी का ध्यान रखें, बस जरूरी यह है कि हमारी वजह से किसी को शारीरिक या मानसिक तकलीफ न हो, पर इसकी वजह अगर यह है कि आप उनकी पसंद का कार्य नहीं करते, विषय नहीं लेते या वस्त्र नहीं पहनते, विवाह नहीं करते, तो उन्हें नजरअंदाज करते हुए आगे बढ़ें. आपकी जिंदगी में किसी भी तरह की दखलअंदाजी करने का, किसी को भी अधिकार नहीं है.

खुद को बेहतर बनाने के लिए स्वयं को कंफर्टेबल, स्वतंत्र रखना बहुत जरूरी है. बेहतर बनने के लिए जरूरी है कि हम स्वयं पर ध्यान दें क्योंकि कोई भी हमें बेहतर बनने से रोक नहीं रहा है. दूसरों से तुलना करना, कंपटीशन करना, जलना, लड़ना, उनकी बुराइयाँ करना छोड़ दीजिए. इस तरह की सोच आपको आगे बढ़ाने की जगह पीछे की ओर धकेलती है, कमजोर बनाती है और बेहतर व्यक्ति बनने से रोकती है.

स्वयं को बेहतर बनाने के लिए यह भी जरूरी है कि हम पूरा ध्यान रखें कि हमारी संगति कैसी है, संगति ज्यादातर बुरी अच्छी नहीं होती है, पर हम जिस भी तरह का इंसान बनना चाहते हैं, हमारे जो भी लक्ष्य हैं वह हमारे दोस्तों से मिलते जुलते हों न कि भिन्न-भिन्न हों. हमें बहुत से रिश्ते बचपन से मिले हैं, हमारे साथ हैं तो उनमें अच्छाइयों को परखने की कोशिश करें, उनकी अच्छाइयों को अपने अंदर उतारें और जिंदगी को सही नजरिए से देख कर और बेहतर बनाएँ.

ना बैठे अपनी परेशानियों को लेकर,
बेहतर बनना ही हमारा लक्ष्य है.
चलो बनाते हैं हर दिन को बेहतर,
इसी मैं हमारा बेहतर भविष्य है.

*****

लोग क्या सोचेंगे

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

बहुत पहले मैंने एक कहानी सुनी थी, जिसमें एक आदमी अपने गधे के साथ जा रहा होता है, जब वह गधे को चलाते हुए जाता है, तो लोग कहते हैं, अरे कितना बेवकूफ है, गधे के होते हुए भी, स्वयं ही सामान उठाकर जा रहा है, यह नहीं कि गधे पर रख दे, थोड़ी देर बाद वह लोगों की बात सुनकर, अपना सामान गधे पर रख देता है. लोग जब देखते कि उसने सामान गधे पर रखा है, तो कहने लगते हैं कि कितना बेरहम है बेचारे गधे पर इतना भारी सामान रखा है.

कहानी का अर्थ यह है कि चाहे आप जो भी करो, कुछ न कुछ तो लोग कहेंगे ही, लोगों का काम है कहना. सोचने दीजिए लोगों को जो वह सोचते हैं क्योंकि अगर हम भी यही सोचेंगे की लोग क्या सोचेंगे, तो फिर लोग क्या सोचेंगे.

हमेशा एक बात याद रखना दोस्तों,

यह जिंदगी एक ही है, इसे खुल कर जियो, मस्ती से जियो और जो आप चाहते हो वही काम करो.

लोग क्या सोचेंगे, लोग क्या कहेंगे, यह सोच कर बहुत से लोगों की जिंदगी बर्बाद हो गई है और याद रखिए जिनके पास कोई कार्य नहीं होता, वही यह सोचता रहता है और दूसरों की निंदा करता रहता है. अगर आपको नहीं पता कि दूसरों की जिंदगी में क्या चल रहा है, तो आप कौन होते हो बोलने वाले? अगर आपको कुछ सोचना है तो खुद के बारे में सोचिए, स्वयं को पहचानिए, स्वयं को बेहतर बनाइए, दूसरों के बारे में सोच सोच कर, अपना जीवन खराब मत कीजिए और दूसरों के भी जिंदगी में अड़चन मत बनिए.

हमने अक्सर देखा है, कोई बच्चा अपने हिसाब से विषय पढ़ना चाहता है, तो लोग उसे गाइड करने लगते हैं, बहुत से लोग गलत रिश्ते में बँध जाते हैं या विवाहित हो जाते हैं और अलग होना चाहते हैं, तो लोग उन पर टिप्पणी करने लगते हैं, देखिए आज नहीं तो कल जिन पर आप टिप्पणी कर रहे हैं, ईश्वर न करे कि आपको या आपके बच्चों को भी कोई ऐसा समय देखना पड़े.

अगर किसी रिश्ते में अत्याचार, दर्द, परेशानियाँ हों, तो उस रिश्ते को उसी वक्त खत्म करें, अत्याचार सहने वाला और करने वाला दोनों ही पापी होता हैं.

21वीं सदी में सभी के मानव अधिकार है, और जो अधिकार कानून ने दिया है उस पर लोग टिप्पणी करें, या अपने खाली समय में बैठकर निंदा करके चटकारे लें, कोई बात नहीं दोस्तों, आप शिक्षित इसलिए नहीं हुए हैं, कि आप कानून को न मानकर, अपने मानव अधिकार को छोड़कर, ऐसे लोगों की बातों के बारे में सोचें, जिनकी छोटी, दकियानूसी सोच है. जो एक मनुष्य को अपने जीवन जीने का अधिकार भी नहीं देना चाहते.

आजकल ऐसे बहुत से केस सामने आ रहे हैं, जिसमें अगर कोई इंसान, क्रोधित होता है, या धमकियाँ देता है तो उसी परिवार के लोग, सामने वाले को कहते हैं मान जाओ. ऐसे मनुष्य की बात मानने की जगह उसको कोई अच्छे मनोचिकित्सक को दिखाइए या पुलिस स्टेशन मैं शिकायत कीजिए. किसी से डरिए नहीं, निडर होकर जिएँ, किसी की गलत बात मत मानिए, जिससे आपको जिंदगी भर तड़पना पड़े, सहना पड़े.

बहुत सी लड़कियाँ, ऐसे लड़कों की कोई शिकायत नहीं करतीं, जो उन्हें छेड़ रहे होते हैं, न ही कोई कदम उठाती हैं, यह सोच कर कि लोग क्या कहेंगे, आप लोगों को छोड़िए और यह सोचिए कि आपकी अंतरात्मा क्या कहेगी, आपकी शिक्षा क्या कहेगी और जिस ईश्वर ने आपको यह शरीर, दिमाग, सोचने, समझने की शक्ति दी है, वह क्या सोचेगा?

बहुत से लोग, आज भी अपने मनपसंद वस्त्र धारण नहीं करते, भोजन नहीं खाते, जिंदगी नहीं जीते, और बस यही सोचते रहते हैं कि लोग क्या सोचेंगे. अगली बार, अगर आपको कुछ सोचना है तो सोचिए, वही लोग सोचेंगे जिनके पास कोई कार्य नहीं है, और अपने लिए नहीं सोच सकते तो ऐसे लोगों के बारे में, सोचकर यह क्यों सोचना कि लोग क्या सोचेंगे, लोग क्या कहेंगे, सिर्फ यह सोचिए, कि अगर हमने कोई सही कदम, सही समय पर, नहीं उठाया तो हमारी आत्मा क्या सोचेगी, हमारी शिक्षा क्या सोचेगी और हमारी जिंदगी कैसी हो जाएगी?

लोग सोच रहे हैं, सोचने दीजिए,
जो आपका दिल कहे, वही कीजिए,
किसी की जिंदगी में मुश्किल ना बनिए,
खुद भी जिएँ और दूसरों को भी जीने दीजिए.

*****

जीवन रूपी चाय

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

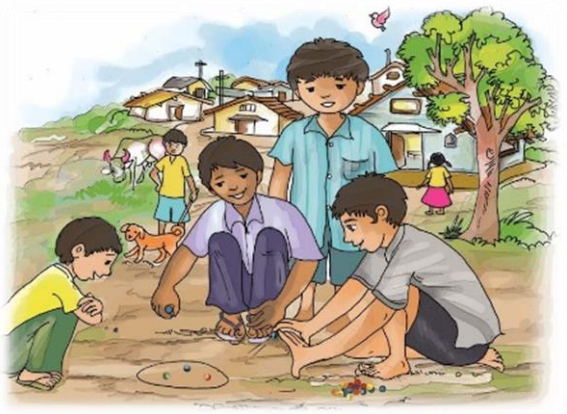

बचपन हमारा, सफेद दूध जैसा,
जिंदगी ने लगाया, उबाल यह कैसा,
कोई ना, जिंदगी को एक स्वादिष्ट चाय बनाएं,
इसकी खुशबू से, जीवन को महकाए.

ना कोई जल्दबाजी, ना बहुत देरी,
धीमी आंच पर चाय, बने और सुनहरी,
छान ले हर एक व्यक्ति,
आलोचना रूपी चाय पत्ती.

थोड़ी सी मिश्री, हमारी मुस्कान,
रखें हमेशा, इलायची सी पहचान,
अदरक और लौंग सा, हमारा ताप,
थोड़ा सा स्वाद, बाकी छानकर निकाल ले आप.

बन गई हमारी, जीवन रूपी चाय,
इसे पूरे प्रेम और धैर्य के साथ बनाएं,
नासमझ शिशु से, प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाए,
कच्चे दूध से, स्वादिष्ट चाय बनाए.

*****

धैर्य रखिए

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

आजकल सभी में धैर्य की बहुत कमी है. कर्मचारियों से गलती हो जाती है, तो उसे समझाने की जगह मालिक उस पर चिल्लाने लगता है, उसे डाँटने लगता है. अब जब भी वह गलती करेगा उसे डाँट याद आएगी, अगर यही बात उन्हें समझदारी से समझाई गई होती तो जब भी दोबारा वह यह गलती करता तो समझता कि इससे क्या नुकसान है. बचपन में भी बहुत से बच्चों को इस चीज से गुजरना पड़ता है. कभी-कभी माता पिता और शिक्षक में धैर्य की कमी से उन्हें डाँट पड़ती है यहाँ तक कि मार भी पड़ जाती है. अब वह छोटा सा बच्चा जब-जब वैसी गलती करेगा तो उसे उनकी डाँट और मार ही याद आएगी. कितना अच्छा होता अगर उसके बड़े उसे प्यार से समझा दें सही-गलत में फर्क बता दें. पर नहीं बड़ों को यह लगता है, कि शॉर्टकट अपना लिया जाए. इस डाँट फटकार से उस बच्चे पर क्या असर पड़ता है, उसका उन्हें अंदाजा भी नहीं होता. बड़े होते होते जब जब कोई और भी वह गलती करेगा तो वह बच्चा यही समझेगा की डाँटना और फटकारना इसका उपाय है क्योंकि उसने भी यही देखा, समझा, और सीखा. यहाँ तक कि जब वह बड़ा हो जाएगा और कोई गलती करेगा तो खुद को सजा देगा इसीलिए आजकल बहुत से लोग कभी खुद को मारते हैं, चिल्लाते हैं, यहां तक की आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है वह सजा के पात्र हैं. अगर हम इंसान है तो हमें हर बात में इंसानियत रखनी चाहिए. हम अपने बच्चों पर किसी तरह का दबाव तो नहीं डाल रहे हैं? क्या हम उनपर छोटी-छोटी बातों पर हाथ तो नहीं उठा रहे हैं? क्या सबके सामने उनकी बेइज्जती तो नहीं कर रहे हैं?

माता पिता और शिक्षक भगवान का रूप माने जाते हैं पर यह भी इंसानी व्यवहार नहीं है कि हम अपने से छोटों पर यहाँ तक कि किसी पर भी हाथ उठाएँ और क्रोध करें या मजाक उड़ाएँ.

किसी की गरिमा को ठेस पहुँचाना, चाहे वह छोटा बच्चा ही क्यों न हो, सरासर गलत है. यहाँ तक कि गिड़गिड़ा कर, रोकर अपनी बात मनवाना भी अधीरता ही है.

अक्सर एक वाक्य पूछा जाता है कि अक्ल बड़ी या भैंस बड़ी? क्योंकि अगर इंसान दिमाग से और शांति से बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़े तो वह लड़ाई बहुत आसानी से लड़ सकता है, अपने दिमाग के बल पर न कि हाथ पैरों से. यही फर्क है इंसान और जानवर में.

जानवर अपने बच्चों को बोलकर और समझदारी से अपनी बातों को समझा नहीं सकते हैं पर इंसान ऐसा कर सकता है.

भले ही हमको ऊपर वाले ने माता पिता, शिक्षक, मालिक बनाया हो पर इन सभी रिश्तो को हम प्यार, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, और धैर्य के साथ निभा सकते हैं.

छोटी सी जिंदगी है, तो क्यों ना हम सभी से प्यार से, खुशी से, शिष्टाचार से, धैर्य से, सम्मान से, सत्कार से, अच्छाई से, समझदारी से पेश आए और सोचें, समझें कि अगर हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार चाहते, ठीक वैसा ही व्यवहार हमें किसी की गलती पर करना चाहिए. विशेष रुप से छोटे बच्चे, अच्छे व्यक्तियों के साथ.

हाँ अगर कोई अपराध करे तो, कानूनी कार्यवाही उन अपराधियों के खिलाफ की जाए पर हमें खुद के जीवन में शांति चाहिए, प्रसन्न मन चाहिए तो हमें खुद को और दूसरों को हर बात समझदारी और धैर्य से समझानी होगी.

पहले तो हम अपने आप को यह बात समझाएँ कि हर समस्या का समाधान हो सकता है. किसी पर भी अपने या अपनों से बड़ों के फैसले दूसरों पर न थोपे.

बहुत से माता पिता अपने बच्चों की शादी जल्दबाजी में करा देते हैं क्योंकि उनके दादा दादी या नाना नानी की यह आखिरी इच्छा होती है, पर उन बच्चों के भविष्य का क्या? तो आप उन्हें प्यार और स्नेह देते हुए समझाएँ.

बहुत से बच्चे शादी होते ही कुछ महीनों में अपने माँ-बाप से अलग हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह कभी नहीं समझेंगे कि उनके बहू बेटे उनसे क्या चाहते हैं? पर वो यह भूल जाते हैं की जब से वह माँ-बाप बने है, तो उनकी चाहत के लिए ही तो जी रहे हैं, क्यों ना हम भी उन्हें ठीक वैसे ही समझाएँ जैसे वह हमें बचपन में समझाते थे, जब उन्होंने हमें बचपन में नहीं छोड़ा तो हम उनको उनके बुढ़ापे में अलग क्यों कर दें?

धैर्य से काम लें, हर बात पर जल्दबाजी, दुर्व्यवहार करना, अपशब्द का उपयोग करना बंद करें.

अगर किसी की गलती करने पर आप उस पर चिल्लाते हैं और अपशब्द बोलते हैं तो वह तो गुनाहगार है पर आप मानसिक रूप से बीमार है.

खुद को पहचानें कि हम उस शक्ति से बने हैं, हम मैं बहुत सारा, धैर्य, स्नेह, शिष्टाचार और इंसानियत है.

*****

पर्यावरण

रचनाकार- लवली यादव

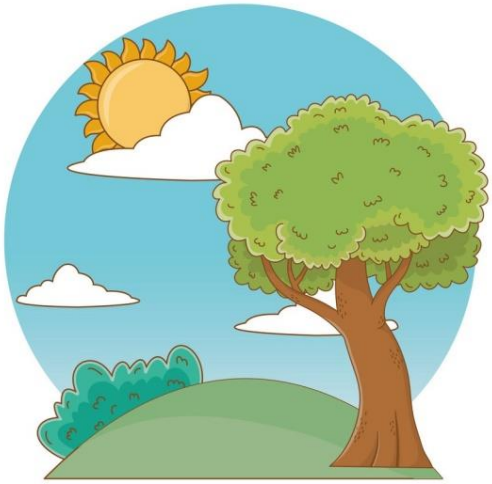

इंसान की देखो कैसी माया,
पर्यावरण को खूब सताया.

देश को आगे ले जाने,
पेड़ काट उन्हें खूब रुलाया.

देश में अनेक कारखाने खुलवाये.
पर नदियों में गंदे जल बहाये.

देखो प्रकृति कैसे असंतुलित हो गई,
ठंडी में गर्मी और गर्मी में बारिश हुई.

हुआ बादलों में धुओं का बसेरा,
पता नहीं अब कब होगा शुद्ध सवेरा.

जंगल नष्ट कर जानवरों को बेघर कर दिए,
अपने स्वार्थ में पर्यावरण नष्ट कर दिए.

पेड़ काटने एक आदमी आया,
धूप है कहकर उसी के छाँव में बैठ गया.

पेड़ बचाओ कहते हम थकते नहीं,
और एक इंसान को पेड़ काटने से रोकते नहीं.

बातों पर अमल कर प्रदूषण को दूर भगाएँ.
चलो शुद्ध और स्वस्थ पर्यावरण बनाएँ.

*****

ज्ञान की बाते

रचनाकार- धारणी सोनवानी

ज्ञान की बातें जो सिखलाता,
गुरु हमारा वह कहलाता.

ज्ञान दीप की ज्योति देकर,
अंधकार को दूर भगाता.

संस्कार सिखलाए गुरु जी,
बड़ो का मान बतलाए गुरुजी.

अनुशासन भी वो सिखलाते,
त्याग समर्पण वह बतलाते.

सबको ज्ञान बाँटते जाते,

अपना ज्ञान बढ़ाते जाते.
उनकी ताकत होती कलम,

कलम नहीं किसी से कम.
विद्यालय है घर जैसा,

हम सब उनके बच्चे जैसे.
एक साथ रहना बतलाए,

सबसे स्नेह करना सिखलाए.

उनके चरण कमल को मैं,
सत-सत नमन करती जाऊँ.

ज्ञान दीप की ज्योति लेकर,
उनका मैं गौरव बन जाऊँ.

*****

प्रसन्नता देने में है लेने में नहीं

रचनाकार- श्वेता तिवारी

एक शिक्षक थे और उनका एक छात्र था. शिक्षक छात्र को बहुत चाहते थे और उसे पढ़ाई के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी देते रहते थे. एक दिन शिक्षक ने कहा कि चलो बेटा हम बाहर घूम कर आते हैं बाहरी दुनिया से कुछ सीखते हैं उससे मैं कुछ पाठ तुम्हें समझाने का प्रयास करूँगा. छात्र खुशी-खुशी तैयार हो गया. दोनों एक खेत की ओर गये जहाँ एक किसान फावड़ा लेकर खेत में अधिक पानी भर जाने के कारण पार को काट रहा था बाजू में ही उसका सामान, एक फटा झोला और उसकी टूटी चप्पल रखी थी. छात्र ने शिक्षक से कहा क्यों न हम इसका झोला और टूटी चप्पल को छुपा दें? देखते हैं कि किसान कैसे परेशान होता है और क्या करता है?

शिक्षक ने थोड़ी देर सोचा फिर बोले कि हम ऐसा करते हैं, झोले में कुछ पैसे रख देते हैं और फिर देखते हैं क्या होता है? छात्र बोला ऐसा ही करके देखते हैं. शिक्षक ने अपनी जेब से कुछ नोट निकाले और चुपके से जाकर उसके झोले में रख दिए. दोनों झाड़ी के पीछे जाकर बैठ गए. किसान जब विश्राम करने खेत की मेड़ पर जाकर बैठा जहाँ पर उसका सामान रखा हुआ था. उसने अपने झोले को छुआ तो देखकर आश्चर्यचकित हो गया. उस झोले में 100-100 के नोट रखे हुए थे जिसे देखकर उसका चेहरा हर्ष से खिल उठा. किसान ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद देने लगा. बोला, हे ईश्वर आज मेरी बीमार पत्नी को दवा की जरूरत है उसके लिए आपने मुझे यह पैसे प्रदान किए हैं इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! ऐसे ही आप सब की मदद करते हैं, कहते-कहते उसकी आंखों से आंसू छलक आए. यह सब शिक्षक और छात्र देख रहे थे. तब शिक्षक ने छात्र से कहा देखो बेटा खुशी किसी को कुछ देने में हैं किसी से कुछ लेने में नहीं इसलिए अपना व्यवहार ऐसा बना कर रखो कि तुम किसी को कुछ दे सको. किसी को कुछ देने में जो प्रसन्नता मिलती है वह प्रसन्नता किसी से कुछ लेने में नहीं मिल सकती. छात्र ने शिक्षक को प्रणाम किया और कहा यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी सीख है. मैं इस बात का सदैव ध्यान रखूँगा और हमेशा दूसरों का सहयोग करूँगा.

*****

फक्र

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

कुछ कदम तुम जो चले,
खुद पर फक्र होने लगा,
जिस माँ-बाप के पास पले,
उनको तुमने दे दिया दगा.

फक्र तुम्हें किस बात में है,
भूल गए जो साथ में है,
ना वक्त दिन या रात में है,
बस धन दौलत ही हाथ में है.

फक्र तुमने जो किया,
आखिर धन के अलावा क्या लिया,
खुद को वक्त भी ना दिया,
हाय तूने फिर क्या जिया.

फक्र कर, तू फक्र कर,
कितना है फक्र तुझे खुद पर,
धन के लिए भटक दर-दर,
मर-मर के जी, जी-जी के मर.

फक्र करने के लिए, तू एक बात अब मान ले,
अपनी जिंदगी को तू, खुद से ही जीना जान ले,
अपनों को हमेशा साथ में, लेकर तू चल,लेकर तू चल.

फिर भी यह माध्वी कहती है, यह फक्र अब भी ना कर, अब भी ना कर,
क्योंकि कब वो वक्त आ जाए,
अपने भी कर दे हम से कोई छल,
अपने भी कर दे हमसे कोई छल.

*****

21 वीं सदी की नारी

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

उठाओ कलम, पुस्तक व लैपटॉप
करो परीक्षा की तैयारी.
कुछ तुम उठाओ, कुछ परिवार में बाँटो
अपने घर की जिम्मेदारी.
लिखने, पढ़ने व काम करने की अब है तुम्हारी भी बारी,
भूलो ना, याद रखो
तुम हो 21वी सदीं की नारी.
भूलो ना, याद रखो
तुम हो 21वीं सदी की नारी.

सीखो करना आत्म रक्षा,
ना पैदा हो अब कोई अत्याचारी,
खुल के जीओ
पहनो जींस, टॉप, स्कर्ट हो या सारी
बनो बलशाली, ताकतवर, बहुत अब
तक कहलाई तुम प्यारी,
भूलो ना और याद रखो, तुम हो 21वीं सदी की नारी.
भले ही हो तो माँ, बेटी, बहन, पर सबसे पहले तुम हो एक नारी,
तुम्हारा भी है खुद का वजूद, तोड़ो रूढ़ीवादी परंपराएं सारी,
रहो प्रसन्न चित्त, दिखा दो इस दुनिया को अपनी कलाकारी,
भूलो ना और याद रखो, तुम हो 21वीं सदी की नारी.
भूलो ना और याद रखो, तुम हो 21वीं सदी की नारी.

ना चुप बैठो ना शरमाओ, सुनाओ तुम करारी,
गलत के गिलाफ उठाओ आवाज और तुम करदो मुकदमा जारी,
अब जीतो व जीताओ,
अब तक बहुत जगह हारी,
भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.
सुनो, भूलो ना और याद रखो, तुम हो 21वीं सदी की नारी.

कभी आग, तो कभी पानी, कभी बन जाओ चिंगारी,
खुश हो जाओ, चाहे आए बेटे या बेटी की किलकारी,
औरत ना कभी थी और ना कभी कहलाएगी बेचारी.
भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.
जान लो भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

चलाओ बाइक, एरोप्लेन, ऑटो हो या फरारी,
कोई धमकाएं व डराए तो पड़ जाओ उन पर भारी,
हो जाओ शिक्षित, निखारो अब भविष्य लेते जाओ जानकारी.
भूलो ना याद रखो,
तुम हो 21सदीं की नारी.
मान लो भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

कोई दखलंदाजी करें,तो बन जाओ चाकू छुरी और आरी.
हर फैसले तुम्हारे हो,यह जिंदगी है तुम्हारी,
शांति का प्रतीक, तो कभी तुम बन जाओ क्रांतिकारी,
भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.
पहचान लो, भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

तुम्हें भी हक है, बनाओ दोस्ती यारी,
कभी मॉडर्न, तो कभी बन जाओ संस्कारी,
कभी घरेलू, कभी व्यवसायी, कभी बनो तुम व्यापारी.
भूलो ना याद रखो
तुम हो 21सदीं की नारी.
समझ लो और भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

कभी पार्वती, कभी दुर्गा तो कभी बन जाओ काली,
बनो स्वाभिमानी, करो जो ठानी, ना होना पड़े आभारी,
हर क्षेत्र में, हर तरफ हो तुम्हारी तरफदारी,
भूलो ना तुम याद रखो तुम हो 21 वीं सदी की नारी.
भूलो ना और याद रखो तुम हो 21 वीं सदी की नारी.

विवाहित हो या हो विधवा या हो तुम कुंवारी,
दिखा दो इस दुनिया को, क्या होती है वफादारी,
जाने तुम्हें जहान, तुम में भी मैं भी हो खुद्दारी,
भूलो ना याद रखो,
तुम हो 21 सदीं की नारी.
भूलो ना और याद रखो
तुम हो 21 वीं सदी की नारी.

मिलके लाओ एक बदलाव, देख के दफा हो भ्रष्टाचारी,
दिखाओ क्या होती है, मेहनत व सिद्दत से काम करके ईमानदारी,
गर्व से ऊंचा हो सर व हिम्मत हो बहुत सारी,
भूलो ना याद रखो तुम हो 21 वीं सदी की नारी.
देखो, भूलो ना याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

उठाओ कलम, पुस्तक व लैपटॉप
करो परीक्षा की तैयारी,
कुछ तुम उठाओ, कुछ परिवार में बाँटो
अपने घर की जिम्मेदारी,
लिखने,पढ़ने व काम करने की अब है,
तुम्हारी भी बारी, भूलो ना याद रखो
तुम हो 21 सदीं की नारी.
हाँ, हाँ, भूलो ना और याद रखो तुम हो 21वीं सदी की नारी.

*****

आई सर्दी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा

ठंडी हवा लेकर
आई सर्दी.

ओंस की बूँदें पीकर
आई सर्दी.

सूरज निकला
हुआ सवेरा.

चिड़ियों ने अपना
छोड़ा डेरा.

गीत गाए पेड़
झूम-झूम कर.

गुन-गुनाए भौंरे
घूम-घूम कर.

फूलों में मुस्कान
लाई सर्दी.

ठंडी हवा लेकर
आई सर्दी.

*****

Happy New Year

Tikeshwar Sinha

Let you sing a song,
Ding dong ding dong.

Play the big drum,
Tarah rum pum pum.

You have a good chance,
So make a nice dance.

Clap sure with cheer,
Yeah, Happy new year.

*****

राजभाषा

रचनाकार- एड. किशन भावनानी

भारत की अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक विविधताएँ और विशिष्टताएँ हैं जिनका अपेक्षित सम्मान करके ही सरकारी कामकाज में हिंदी का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है.

राजभाषा हिंदी का प्रयोग सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में करने अन्य भाषाओं के अपेक्षित सम्मान, सहयोग की अपेक्षा सराहनीय पहल

भारत में हिंदी को राजभाषा का सम्मान दिया गया है. वैश्विक रूप से भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष, जैविक विविधता, सामाजिक, सांस्कृतिक, विविधताओं, विशिष्टताओं, भाईचारे एवं अनेकता में एकता के लिए प्रसिद्ध है. हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है. यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है. उस समय भले ही राजकीय कार्य,संस्कृत फारसी, अंग्रेजी में होते रहे हों परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र में आपसी सम्पर्क, संवाद-संचार, विचार-विमर्श, जीवन-व्यवहार का माध्यम हिन्दी ही रही है. चाहे वो पत्रकारिता का या स्वाधीनता संग्राम का क्षेत्र क्यों न हो हर जगह हिन्दी ही जनता के विचार - विनिमय का साधन बनी रही है. अगर हम अन्य भाषाओं और उपभाषाओं की बात करें तो भारत में सैकड़ों उपभाषाएँ भी हैं परंतु हमारे संविधान में बाईस भाषाएँ मान्यता प्राप्त हैं. भारत की सबसे बड़ी खूबसूरती है कि किसी भी पक्ष की सरकार हो परंतु सामाजिक, सांस्कृतिक, विविधताओं, भाषाओं को बराबर सम्मान मिलता रहा है. वर्तमान समय में भी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित सभी संवैधानिक पदों पर बैठे सम्माननीयों के द्वारा हर भाषा, रीतिरिवाज को अपेक्षित सम्मान दिया जाना भारतीय समाज की सुंदरता में चार चाँद लगाने के बराबर है.

भारत में भाषाओं के विस्तार की बात करें तो, जैसे-जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है भाषा उतने ही अलग अलग रूपों में विकसित होना शुरू हो जाती है. यही हिंदी भाषा के साथ हुआ क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा तक सीमित थी. उसके बाद वह साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसका विकास हुआ फिर समाचार-पत्रों में हिन्दी का विकास हुआ खेलकूद की हिन्दी बाजार की हिन्दी भी सामने आई. अत: अपने लगातार विकास के कारण स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और एक राजभाषा का रूप विकसित हो गया. राजाभाषा भाषा के उस रूप को कहा जाता है जो राजकाज में प्रयुक्त की जाती है.

स्वतंत्रता के बाद राजभाषा आयोग द्वारा यह निर्णय लिया गया कि हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाया जाए. इस निर्णय के बाद ही संविधान ने इसे राजभाषा घोषित किया था. प्रादेशिक प्रशासन में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड राजभाषा हिन्दी का प्रयोग कर रहे

हैं. अगर हम दिनांक 25 नवंबर 2021 को आयोजित कार्मिक लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की आयोजित हुई 13 वीं बैठक की बात करें तो पीआईबी के अनुसार, केंद्रीय मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि, हम मानते हैं कि सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी को व्यवहार और प्रयोग में लाने में हम अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाए हैं. यकीनन यह काम बहुत आसान भी नहीं है. चूंकि आप सभी गणमान्य व्यक्ति हैं और समझते हैं कि भारत जैसे विशाल देश की अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताएँ और विशिष्टताएँ हैं, जिनका अपेक्षित सम्मान करते हुए ही सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिक से अधिक उपयोग को सुनिश्चित किया जाना है. उन्होंने कहा कि हिंदी ही नहीं बल्कि हमारी सभी भारतीय भाषाएँ सांस्कृतिक विविधताओं से भरे इस देश की विराट राष्ट्रीयता में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु अपने सरल, असाधारण विस्तार और बोलचाल एवं संचार का सशक्त माध्यम होने के नाते हिंदी पूरे देश में सबसे ज्यादा पढ़ी-लिखी, बोली और समझी जाने वाली भाषा है, और यही एक वजह थी जिसके चलते इसे राजभाषा का सम्मान दिया गया. उन्होंने कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा का इस्तेमाल करना हमारी एक संवैधानिक जिम्मेदारी है और हमें इस जिम्मेदारी से बचना नहीं चाहिए, बल्कि अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके अपने को गौरवान्वित महसूस करना चाहिए.

हमारा विभाग और इसके नियंत्रणाधीन कार्यालय राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिवद्ध हैं. उन्होने कहा कि हिंदी एक लंबे समय से देश में साहित्य, पत्रकारिता फिल्मों, ललित कलाओं विविध नाट्य रूपों तथा आम बोल-चाल का सबसे सशक्त माध्यम बन कर उभरी है और न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में एक पहचान बना रही है. उन्होंने कहा कि हमारे लिए ये गौरव की बात है कि आप सभी को राजभाषा के संबंध में विशिष्ट अनुभव है. इस समिति का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति में निरंतर सुधार लाने के लिए मंत्रालय को सुझाव देना है. हिंदी सलाहकार समिति के पुनर्गठन के बाद यह पहली बैठक है. गत बैठक हमने 16 फरवरी, 2018 को आयोजित की थी समिति के माननीय सदस्यों द्वारा गत बैठक में दिए गए सुझावों पर विभाग ने अमल किया है. मैं आशा करता हूँ कि आज की बैठक में भी जो बहुमूल्य सुझाव रखे जाएँगे उन पर अमल किए जाने का पूरा प्रयास किया जाएगा. अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत की अपनी सामाजिक,सांस्कृतिक विविधता और विशेषताएँ हैं जिनका अपेक्षित सम्मान करके ही सरकारी कामकाज में हिंदी का उपयोग सुनिश्चित किया जाना है. राजभाषा हिंदी का प्रयोग सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में करने अन्य भाषाओं के अपेक्षित सम्मान सहयोग की अपेक्षा सराहनीय पहल है.

*****

वीरांगना झलकारी बाई

रचनाकार- प्रमोद नवरत्न

झाँसी की मिट्टी में जन्मी,
महारानी झाँसी की परछाई थी.
दुर्गा दल की सेनापति,
वो वीरांगना झलकारी थी.

बुन्देल खण्ड की वीर पुत्री,
स्वतंत्रता सेनानी थी.
गोरों को ललकारने वाली,
नारी शक्ति झलकारी थी.

शेरनी जैसी दहाड़ उसकी,
रण भूमि में गरज उठती थी,
रक्त से धरती रंग देती,
तोप, तलवारों से सजी नारी थी.

छलनी हो गई खुद गोलियों से,
पर नाम रानी का कर गई.
लक्ष्मी बाई की जान बचाकर,
खुद प्राण त्यागकर चली गई.

झलक कभी झलकारी की,
मिट नहीं सकता झाँसी से.
प्राण न्यौछावर किया था उसने,
रक्त से भरी लाली से.

अंग्रेजों को धूल चटाया,
वो कोलियों की राजदुलारी थी.
शक्ति की अखण्ड स्वरूपा,
वो वीरांगना झलकारी थी.

*****

मेरे बिलासपुर में

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

बिलासपुर, छत्तीसगढ़ का प्रमुख जिला है. यह प्रशासनिक एवं शहरी दोनों दृष्टि से राज्य का दूसरा सबसे प्रमुख शहर है. बिलासपुर लगभग 400 साल पुराना शहर है. माना जाता है कि यह लंबे समय तक मछुआरों की बस्ती थी और इसका नाम मत्स्य-महिला (केंवट जाति की महिला) "बिलासा" के नाम पर रखा गया है. ऐतिहासिक रूप से बिलासपुर, रतनपुर के कलचुरी राजवंश का भाग था. छत्तीसगढ़ का उच्च न्यायालय बिलासपुर में ही स्थित है. अतः इसे 'न्यायधानी' होने का गौरव प्राप्त है. सन 1861 में बिलासपुर जिले की स्थापना की गई थी. तब अंग्रेजो का शासन था. यहाँ की प्रमुख नदियाँ- अरपा, लीलागर और मनियारी हैं.

ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल

1. रतनपुर: कलचुरी वंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने 1050 ई. (11 वीं शताब्दी) में यह नगर बसाया था. इसलिए इसका नाम रतनपुर पड़ा. पौराणिक काल में इसे कुबेरपुर के नाम से जाना जाता था. यह तालाबों के शहर के नाम से भी जाना जाता है यहाँ कभी 157 तालाब हुआ करते थे पर अब इनकी संख्या 120 रह गई है. मंदिरों के पास ही अधिकतर तालाब हैं. ऐसी मान्यता है कि श्रद्धालु तालाब में स्नान कर मंदिर में प्रवेश करें, इस उदेश्य से मंदिरों के पास तालाब बनवाए गए थे.

रतनपुर के आसपास और भी कई दर्शनीय और पौराणिक तथा आकर्षक पर्यटन स्थल है, जिनमें प्रसिद्ध "51 शक्ति पीठ में से एक महामाया मंदिर" सबसे विशेष और पौराणिक है. यहाँ भैरोंबाबा मंदिर, लखनिदेवी मंदिर, रामटेकरी मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध है. यहाँ पांडव महल भी है. जो द्वापरयुग के पांडवो से सम्बन्धित मना जाता है. यहाँ पहाड़ियों से घिरा प्रसिद्ध खुटाघाट बाँध भी है. जिसमे भैसाझार परियोजना जो सिचाई से सम्बंधित है,संचालित है.

2. ताला गाँव: बिलासपुर से 28 किमी दूर मनियारी नदी के तट पर तालागाँव स्थित है. तालागाँव छत्तीसगढ़ के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों में से एक है. यहाँ 6वीं शताब्दी की रूद्रशिव की प्रतिमा पाई गई है. यहाँ चौथी व पांचवीं शताब्दी के मंदिर स्थित हैं जिन्हे देवरानी-जेठानी मंदिर कहते है. यह मंदिर लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित है. इसे सन 1987 में निकाला गया था. इस प्रतिमा को वास्तु इतिहास की अनोखी घटना कहा जा सकता है. इस प्रतिमा के 11 अंग विभिन्न प्राणियों से निर्मित किये गए हैं. यह 7 फुट ऊँची, 4 फूट चौड़ी तथा 6 टन वजन की लाल बलुए पत्थर की बनी है. इस प्रतिमा को अभी तक रूद्र शिव, महारुद्र, पशुपति, अघोरेश्वर, महायज्ञ बिरूवेश्वर, यक्ष आदि नाम दिये जा चुके है.

3. मल्हार: मल्हार में ताम्र पाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक का इतिहास सजीव हो उठता है. यहाँ कई प्राचीन मंदिरों के अवशेष मिलते हैं और यह एक महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल है.

4. डिडनेश्वरी मंदिर: शुद्ध काले ग्रेनाइट से बनी माँ डिडनेश्वरी की प्रतिमा लोगों की आस्था का केंद्र है. हजारो लोग माँ डिडनेश्वरी के दर्शन के लिए पहुँचते है. मान्यता है कि देवी के दर्शन मात्र से भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं. माता अपने दरबार से किसी को भी खाली हाथ नहीं जाने देती. यहाँ स्थानीय लोगों के अलावा पूरे छत्तीसगढ़ और देशभर से लोग दर्शन के लिए पहुँचते हैं. मल्हार में अनेक मंदिरों के अवशेष हैं.

5. कानन पेंडारी: कानन पेंडारी छत्तीसगढ़ के बिलासपुर शहर से 10 किलोमीटर दूर मुंगेली रोड पर सकरी के पास स्थित है. इस जूलॉजिकल गार्डन की स्थापना वर्ष 2004 -2005 में की गई थी. यह लगभग 114.636 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है. यहाँ लगभग 70 प्रजातियों के वन्यजीव है जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं. यहाँ दूर दूर से पर्यटक आते है.

औद्योगिक क्षेत्र: बिलासपुर में तिफरा औद्योगिक क्षेत्र, सिलपहरी औद्योगिक क्षेत्र और सिरगिट्टी औद्योगिक क्षेत्र विशेष रूप से प्रसिद्ध है. यहाँ बड़े-बड़े कारखाने हैं.

सिम्स: छत्तीसगढ़ इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस (CIMS) बिलासपुर में स्वास्थ सेवाओं के लिए प्रसिद्ध शासकीय संस्थान है. यहाँ प्राइवेट क्षेत्र के स्वास्थ्य संस्थान भी है जिनमें, ओपेरा, किम्स इत्यादि प्रमुख है.

प्रमुख शैक्षणिक संस्थान: बिलासपुर छत्तीसगढ़ के शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है. यहाँ पूरे राज्य से विद्यार्थी इंजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं का अध्ययन करने आते हैं. बिलासपुर में 5 प्रमुख विश्वविद्यालय हैं.

1. गुरु घासीदास विश्वविद्यालय - केंद्रीय विश्वविद्यालय
2. अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय
3. पंडित सुंदरलाल शर्मा (खुला) विश्वविद्यालय
4. डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय
5. प्रबंधन और प्रौद्योगिकी के महर्षि विश्वविद्यालय
6. पत्रकारिता से सम्बंधित विश्व विद्यालय भी यहाँ है.

बिलासपुर NTPC: बिलासपुर में NTPC की स्थापना सीपत में की गई है. जो कोयले से विद्युत उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाता है. यह अरपा नहीं के किनारे स्थित है.

*****

चिड़िया

रचनाकार- प्रदीप कुमार दाश

उषा की तान,
गीत गाती चिड़िया.
सांझ की राग,
आँसुओं की पुकार.

खुशी की लय,
कभी गम की साज.
हंसती कभी,
कभी वो रो पड़ती.

हवा बेरुखी,
करती उसे दुःखी.
खोजती तृण,
निकल पड़ी वन.

उड़ती चली,
तृण, तरु, नभ को.
दुःख बताती,
विजन वन में वो.

गीत सुनाती,
कलरव करती.
देती नीड़ आकार.

*****

राष्ट्रीय चिन्ह

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

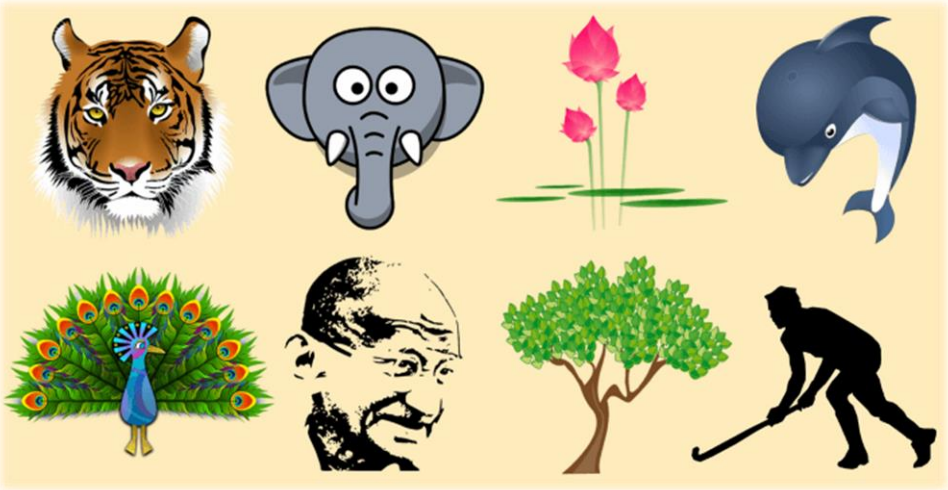

राष्ट्रीय पुष्प कमल कहलाता,
जो कीचड़ में ही खिल जाता.

राष्ट्रीय पशु बाघ कहलाता,
जो ऊंची-ऊंची छलांग लगाता.

राष्ट्रीय वृक्ष बरगद कहलाता,
जो हमें ऑक्सीजन देता.

राष्ट्रीय पक्षी मोर कहलाता,
जो सुंदर पंख वाला कहलाता.

राष्ट्रीय खेल हॉकी कहलाता,
जो भारत को पदक दिलाता.

राष्ट्रीय फल आम कहलाता,
जो हम सबको भाता,

राष्ट्रीय नदी गंगा कहलाती,
जो पवित्र कहलाती.

राष्ट्रीय जल जीव डॉल्फिन मछली कहलाती,
जो जलचर कहलाती.

राष्ट्रीय गान जन-गण-मन कहलाता,
जो बावन सेकंड में गाया जाता.

*****

मन की शक्ति

रचनाकार- सीमा यादव

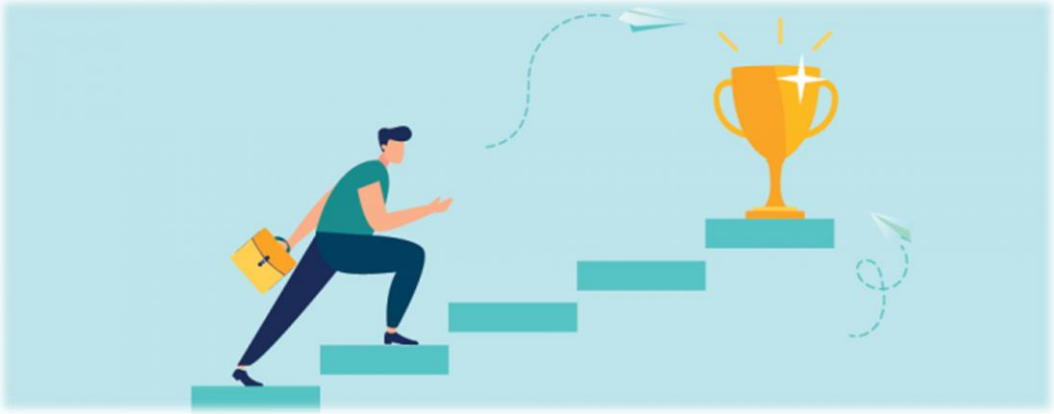

मन से मन मिले तो मन एकाग्र हो जाता है,
मन से मन न मिले तो मन भ्रष्ट हो जाता है.

मन की शक्ति बड़ी निराली-अनोखी होती है,
जो नामुमकिन को मुमकिन कर जाती है.

मन से ही सब कुछ हासिल हो पाता है,
इसलिये मन पर काबू रखना भी जरूरी हो जाता है.

मन को जीतने से ही सारी कामयाबी मिलती है,
तन की सुंदरता मन की खूबसूरती पर निहित होती है.

यदि मन से विचलित हो जाएं तो सब कुछ बिखर जाता है,
और यदि मन से सुदृढ़ व सबल हैं तो संघर्षों से छुटकारा मिल जाता है.

मन ही है जो आपके जीत-हार को तय करता है,
मन के हारे हार और मन के जीते जीत इसीलिए कहा जाता है.

मन की गति को कोई भी रोक नहीं सकता है,
इसीलिए मन को हवा से भी अधिक गतिशील कहा जाता है.

मन की शक्ति के आगे सबको हारना पड़ता है,
मन की गति को जो रोक सके, वही ईश्वर कहलाता है.

*****

जाड़ के दिन आगे

रचनाकार- प्रीतम साहू

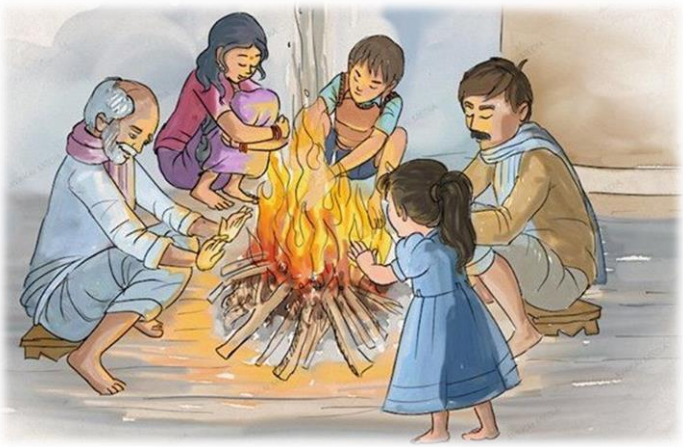

कथरी कमरा साल ओढे,
लदलद जाड़ जनावय जी.
सरसर सरसर हवा धुकत हे
जाड़ के दिन आगे जी.

अघन पुश के जाड़ म संगी,
दांत हर कटकटाथे जी.
मुहु डहर ले कुहरा निकले,
गरम जिनिस सुहाथे जी.

सांझा बिहिनिया सित बरसे,
घाम तापे बर जिवरा तरसे.
चारो कोती कुहरा छागे,
जाड़ मा सब मनखे जडा़गे.

बारे अंगेठा अउ भुर्री ला,
तभो ले मनखे कांपे जी.
सेटर मफलर साल ओढ़े,
गोरसी मा आगी तापे जी.

जेन घाम हर गरमी म,
सबो ला टोरस लागय जी.
आज जाड़ म उही घाम हर,
सबो ला घाते सुहावय जी.

*****

सफाई वाले

रचनाकार- सोमेश देवांगन

घर-घर दुवारी मा जाके,
काड़ी कचरा ला उठाइस.

साफ रखव घर अंगना वो,
कही के सब ला बताइस.

का पानी का बरसात मा,
जाड़ घलो नई जनाइस.

सफाई के महत्तम ला वो,
पूरा जग मा बोल बगराइस.

अब सुग्घर शहर हावय ये ,
कहिके नाम इहा पुकारिस.

जेन हर ए बी नई जनाय,
आघू आ कप ला उठाइस.

काम करे हे जेन मन हर,
मन छोट कभू नई वो करिस.

धर के रिक्सा पहिन के टोपी,
सिटी मारत आघू कोती बढ़िस.

*****

ले आई छब्बीस जनवरी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

भारत का गणतंत्र दिवस का दिन,
ले आई छब्बीस जनवरी.

भारत को अंग्रेजों से मुक्ति,
दिलाई छब्बीस जनवरी.

लाल किला पर तिरंगा झंडा,
फहराई छब्बीस जनवरी.

घर घर में आजादी का जश्न,
मनाई छब्बीस जनवरी.

भारत को अपनी सत्ता,
दिलवाई छब्बीस जनवरी.

भारत का अपना संविधान,
लागू कराई छब्बीस जनवरी.

गांधी नेहरु अम्बेडकर की,
जयकारा लगाई छब्बीस जनवरी.

भारत को आजाद मुल्क,
बनाई छब्बीस जनवरी.

*****

किसका कार्य

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

आज 21वीं सदी में, हम पूरी तरह से दकियानूसी सोच से आजाद हो चुके हैं, फिर भी बहुत से व्यक्ति इस सोच से आजाद नहीं होना चाहते हैं, पुरुष को लगता है कि घरेलू कार्य सिर्फ महिलाओं के लिए है, वहीं बहुत सी महिलाओं को भी लगता है कि नौकरी करना और पैसे कमाना या तकनीकी कार्य सिर्फ पुरुषों का है.

हालाँकि, बहुत से लोगों ने इन दोनों ही कार्यों को जिम्मेदारी से अपनाया है और वही सही मायनों में शिक्षित कहे जा सकते हैं. ऐसा किसी किताब में नहीं लिखा हुआ है यहाँ तक कि हर पुस्तक में चाहे विज्ञान हो या नैतिक शिक्षा हो, उसमें यही सिखाया गया है क्लीनलीनेस इस नेक्स्ट टू गॉडलीनेस. यह सभी को सिखाया गया है, हिंदी में भी एक प्रसिद्ध कहावत में कहा गया है कि स्वच्छता भक्ति से भी बढ़कर है. पाठशाला में कोई भी तकनीकी ज्ञान सिखाया जाता है तो वह सभी को सिखाया जाता है.

यदि हम समाज में समानता चाहते हैं, तो हमें सभी कार्यों को अपनाना होगा और यह भेदभाव करना बंद करना होगा कि यह कार्य महिलाओं का है और यह कार्य पुरुषों का है.

जब तक आप दोनों कार्यों को नहीं सँभालते तब तक आप इन सब का महत्व भी नहीं समझ पाएँगे, आज भी बहुत से पुरुष महिलाओं को यही कहते हैं, करती क्या हो तुम पूरे दिन? वहीं महिलाएँ नहीं समझ पाती कि धन कैसे कमाया जाता है और इसीलिए शॉपिंग में और किटी पार्टीज में कभी-कभी पानी की तरह धन बहा देती है.

हर कार्य को करने में मेहनत की आवश्यकता होती है और हमें तब तक नहीं पता चलेगा जब तक हम उस कार्य को स्वयं कर न लें, तभी हम एक दूसरे का सम्मान और कार्यों का महत्व जान पाएँगे.

अगर कोई महिला चाहती है कि उसे हर वक्त घरेलू कार्यों में न उलझना पड़े तो उसे भी नौकरी करना आवश्यक है वहीं अगर कोई पुरुष ऐसी महिला से विवाह करता है जो नौकरी करती है तो उसे भी घरेलू कार्य आने चाहिए.

आज भी बहुत सी महिलाओं को धन कमाना भार लगता है वहीं बहुत से पुरुषों को घरेलू कार्य करने में शर्म आती है. सदियों से यही होता आ रहा है एक व्यक्ति घर में कमा रहा है तो बाकी बैठकर खा रहे हैं वही एक महिला घर के सारे काम कर रही है तो बाकी मजे से रह रहे हैं. आज के समय में एक दूसरे का हर तरह से हाथ बँटाना बहुत जरूरी है.

मम्मी या पापा दोनों को ही हर तरह से, सारे कार्यों को सीखना चाहिए कि अगर बच्चे को भूख लगी हो या बाहर कुछ खरीदने को कहे तो हमारी आँखें एक दूसरे को न ढूँढते हुए स्वाभिमान से उसकी जरूरतों को पूरी कर सके. जिस दिन हमारे देश में, कार्यों का यह भेदभाव समाप्त हो जाएगा और हर पुरुष यह समझेगा कि घर के छोटे-छोटे काम करने से उनका स्वाभिमान बढ़ेगा न कि घटेगा और हर महिला कार्य करने लगेगी, तकनीकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारेगी उस दिन हमारा देश बहुत ही आगे होगा, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं.

चलिए बँटाते हैं एक दूसरे का हाथ,
कभी न छोड़े एक दूसरे का साथ.
यह तुम्हारा कार्य, यह मेरा कार्य न करें,
करते हैं सिर्फ स्वाभिमान और समानता की बात.

*****

बंदर जी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

पेड़ पर बैठे बंदर जी,
थर थर कांप रहे हैं.

घर न बनाने की सजा,
आज देखो पा रहे हैं.

बेरहम सर्दी की मार,
रोज खूब खा रहे हैं.

ठंड के मारे बैठे बैठे,
अपना दांत बजा रहे हैं.

रात रात भर सर्दी के मारे,
जाग कर बीता रहे हैं.

सर्दी के इस मौसम में,
मन ही घबड़ा रहे हैं.

पेड़ पर बैठे बैठे,
हाथ पांव हीला रहे हैं.

सर्दी के इस मौसम में,
पत्तों में बदन छुपा रहे हैं.

*****

रविवार का दिन

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

हफ्ते में जब आता है, रविवार का दिन.
सब बच्चों को हंसाता है, रविवार का दिन.

सबको स्कूल जाने से, छुट्टी दिलवाता रविवार का दिन.
होमवर्क ट्यूशन पढ़ने से, फुरसत दिलवाता रविवार का दिन.

हर सरकारी दफ्तर को, बंद कराता रविवार का दिन.
घूमने सैर सपाटे का, दिन लाता रविवार का दिन.

छुट्टी वाला दिन देखो, कहलाता रविवार का दिन.
सारी दुनिया में महान, कहलाता रविवार का दिन.

*****

हमारे प्रेरणास्रोत

आनंद कुमार

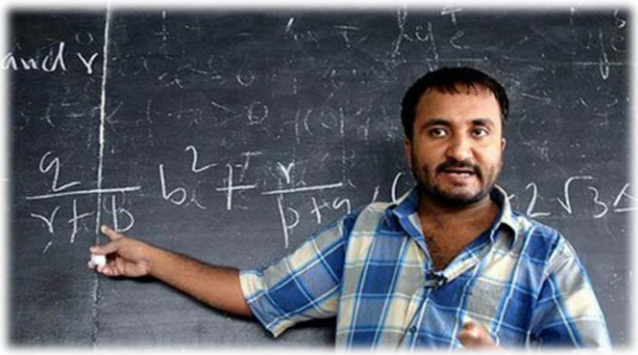

शिक्षा ही किसी देश के भविष्य को तय करती है. शिक्षक भावी कर्णधारों के जीवन को गढ़ने और उनके चरित्र निर्माण करने में महती भूमिका निभाते है. इस मर्म को जिस शिक्षक ने समझा आज हम उन्हीं की बात करेंगे. उनका मुख्य उद्देश्य गरीब छात्रों को आईआईटी और जेईई में प्रवेश के लिए तैयारी करवाना था. हर साल लगभग तीस बच्चे उनके संस्थान से चयनित होते थे. इसलिए वह सुपर थर्टी के नाम से भी मशहूर हुए.

भारत के उत्तर पूर्व में स्थित बिहार राज्य है, जिसने हमें कई राजनेता और कई महापुरुष दिए. गंगा किनारे बसे शहर पटना में एक बच्चे का जन्म 1 जनवरी 1973 को हुआ. जी हाँ बच्चों मैं बात कर रही हूँ आनंद कुमार जी की. उनके पिता पोस्ट ऑफिस में क्लर्क थे. गरीब परिवार में जन्म होने के कारण वह प्राइवेट स्कूल में नहीं पढ़ पाए. इनकी शिक्षा पटना के एक सरकारी हिंदी मीडियम स्कूल में हुई. पटना में ही रहते हुए उन्होंने नेशनल कॉलेज से ग्रेजुएशन की पढ़ाई की. उस समय पटना की लाइब्रेरी में पढ़ने के लिए पर्याप्त पुस्तके नहीं थी. इसलिए वह 6 घंटे का सफर करके बनारस जाते और अपने भाई के हॉस्टल रूम में ठहरते थे. बीएचयू की लाइब्रेरी में अंग्रेजी किताबों को पढ़ते और फिर पटना लौट आते थे. आनंद कुमार की इसी कड़ी मेहनत के चलते कैंब्रिज विश्वविद्यालय में उन्हें पी.एच.डी. करने का मौका मिला. परंतु पैसे की कमी के कारण वह इसमें दाखिला नहीं ले पाए. इसी बीच उनके पिता का निधन हो गया. पारिवारिक स्थिति और कमजोर हो गई. इस संघर्ष के दौर में अपने परिवार की आजीविका चलाने के लिए वह अपनी माँ के साथ पापड़ का व्यवसाय करने लगे. इसी के साथ वह समय निकालकर कुछ छात्रों को गणित भी पढ़ाते. धीरे-धीरे साल 1992 में आनंद कुमार ने ₹500 महीने का एक रूम किराए पर लिया और खुद का कोचिंग क्लास रामानुज स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स की शुरुआत की. पहले साल मात्र 2 विद्यार्थी आए. धीरे-धीरे हर साल छात्रों की संख्या बढ़ने लगी. तीसरे वर्ष लगभग 500 छात्रों ने दाखिला लिया. आज हर साल कोचिंग से लगभग 30 बच्चों का सिलेक्शन आईआईटी के लिए होता है. इसलिए वह सुपर थर्टी के नाम से भी मशहूर हुए.

साल 2000 में एक गरीब छात्र उनके पास आया, जो आईआईटी की कोचिंग करना चाहता था. परंतु उसके पास ट्यूशन फीस के पैसे नहीं थे. आनंद कुमार ने इस बच्चे को पढ़ाया और इसका चयन आईआईटी के लिए हो गया. इससे प्रेरित होकर उन्होंने आईआईटी की कोचिंग शुरू कर दी. इसके बाद हर साल कोचिंग के द्वारा

एंट्रेंस एग्जाम आयोजित किया जाने लगा. हर साल ऐसे 30 विद्यार्थियों का चयन किया जाता जो कोचिंग की फीस देने में असमर्थ थे. इस संस्थान में विद्यार्थियों को ट्यूशन दी जाती, स्टडी मेटेरियल दिया जाता और साथ ही उनकी रहने व्यवस्था भी की जाती. इस कोचिंग में लगभग सभी मूलभूत सुविधाएँ छात्रों को उपलब्ध कराई जाती हैं. इस कोचिंग को चलाने के लिए वह किसी और संस्था से वित्तीय सहयोग नहीं लेते हैं. इसका खर्च वह अपने ही दूसरे संस्थान रामानुजन इंस्टीट्यूट से निकालते हैं.

आनंद कुमार एक गणितज्ञ होने के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में संपादक भी हैं. स्कूल के समय से ही इन्होंने नंबर थ्योरी पर पेपर सबमिट किए थे. जिसे मैथमेटिक्स स्पेक्ट्रम और मैथमेटिकल गैजेट में प्रकाशित किया गया था. सुपर थर्टी का नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है. उन्हें बिहार के सर्वोच्च पुरस्कार "मौलाना अब्दुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार" सहित कई अवार्ड प्राप्त हो चुके हैं.

एक गरीब परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी. वह हर उस बच्चे के साथ खड़े हैं, जो पढ़ना चाहते हैं पर कोचिंग की भारी-भरकम फीस नहीं दे पाते. वह आज समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के शैक्षिक उत्थान की दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं. इसीलिए वह आज हमारे प्रेरणा स्रोत हैं.

*****

पहाड़ों से आ गई सर्दी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

अपनी धाक जमा रही सर्दी,
पहाड़ों से आ गई सर्दी.

घूम रही है गाँव शहर में,
पिकनिक खूब मना रही सर्दी.

बर्फ का देखो चादर ओढ़े,
कैसे घुम रही है सर्दी.

अपने आने की दस्तक,
घर-घर में दे रही है सर्दी.

बर्फ के रथ पर बैठ कर,
निकल पड़ी है घर-घर से सर्दी.

सबके मुँह से धुआँ,
देखो निकाल रही है सर्दी.

कोहरा शीत लहर का बादल,
रोज दिखा रही है सर्दी.

गर्म लबादों की घर-घर में,
खूब धूम मचा रही है सर्दी.

*****

गड़रिया और खज़ाना

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

एक गाँव में समारू नाम का गड़रिया रहता था. वह रोज भेड़ चराने नदी किनारे जाया करता था. एक दिन भेड़ चराते समय उसे लगा कि कोई उसका नाम लेकर बार-बार आवाज़ दे रहा था. समारू ने कहा- 'तुम कौन हो भाई? मुझे क्यों पुकार रहे हो? मेरे सामने आओ.'

कुछ देर के लिए आवाज़ बंद हो गई. ऐसा लगा जैसे पुकारने वाले ने समारू की आवाज़ सुन ली हो.

फिर नदी से आवाज़ आई - 'समारू मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा. तुम डरो मत, मेरी ओर आओ. मैं तुम्हें बहुत सारा धन दूँगा.' समारू धन के लालच में इधर-उधर देखते हुए नदी के किनारे पहुँचा. पर वहाँ कोई नज़र नहीं आ रहा था. वह सोचने लगा आखिर कौन है जो मुझे बार-बार पुकार रहा है?

समारू ने कहा- 'मैं नदी किनारे आ गया हूँ, लेकिन तुम मुझे कहीं दिखाई नहीं दे रहे हो. तुम सामने आओ और अपना परिचय दो.' नदी से फिर आवाज़ आई- 'समारू अब मैं जो कहने जा रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो. मैं सात दोहरे का खज़ाना हूँ. मैं नदी के पानी में बैठा एक गरीब और भले इंसान की प्रतीक्षा कर रहा हूँ. मेरा निश्चय है कि जो मेरी आवाज़ सुनकर मेरे पास आएगा, मैं उनके साथ उसके घर चला जाऊँगा. तुमसे पहले मैंने कई लोगों को आवाज़ दी, लेकिन सभी मेरी आवाज़ सुनकर भाग जाते थे. कोई भी मेरे पास नहीं आता था. तुम साहस करके मेरे पास आए हो अब मैं तुम्हारे ही साथ चलूँगा. मेरे अंदर सोना और चाँदी भरा हुआ है. मुझे तुम अपने घर ले जाओ और अपनी गरीबी दूर करो.'

समारू मन-ही-मन अति प्रसन्न हुआ और कहा- 'यदि तुम मेरी गरीबी दूर करना चाहते हो तो मेरे साथ चलो, लेकिन मेरी एक शर्त है. इस खजाने का सोना और चाँदी तुम मुझे दोगे तभी मैं तुम्हें अपने घर ले जाने के लिए तैयार हूँ.'

समारू की बात सुनकर सात दोहरे का खज़ाना नदी से बाहर निकला. वह खज़ाना एक साँकल में बँधा हुआ था. तट पर आकर सबसे अंतिम और बड़े सातवें खज़ाने से आवाज़ आई- 'तुम छ: खजानों को अपने साथ ले

जा सकते हो, लेकिन मुझे ले जाने के लिए तुम्हें अपने पुत्र की बलि देनी होगी. तभी मैं तुम्हारे साथ चलूँगा अन्यथा नहीं.'

समारू ने कहा- 'मैं छ: खज़ानों को अपने घर अवश्य ले जाऊँगा, लेकिन तुम्हें नहीं ले जाऊँगा. मेरा एक ही बेटा है तुम उसकी बलि देने कह रहे हो, तो यह सात दोहरे का खज़ाना मेरे किस काम का. मेरा असली खज़ाना तो मेरा पुत्र और परिवार है.'

इतना कहकर समारू ने अपनी कुल्हाड़ी से सातवें खजाने की साँकल को काट दिया. सातवाँ खज़ाना लुढ़ककर नदी में चला गया.

समारू छ: खजानों और भेड़ों के साथ घर आ गया.

खज़ानों से सोना-चाँदी निकालकर सुनार के पास बेच आया. बेचने से जो रुपये मिले उनसे बड़ा सा महल बनवा लिया और अपने परिवार के साथ ठाट-बाट से रहने लगा.

*****

शरद आगमन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

शरद आगमन से सभी, थर-थर काँपे देह,
कपड़े पहने गर्म है, बढ़ता सब का नेह.

सूरज निकले देर से, चले पवन भी तेज,
शीत बूँद सजती धरा, लगती जैसे सेज.

ओस बूँद है छा गयी, जैसे मोती हार,
झूमे नाचे है धरा, करे सभी से प्यार.

धुँधला-धुँधला-सा दिखे, देखे चारों ओर,
ढ़ँक जाता है मेघ भी, होता है जब भोर.

हरी-भरी धरती दिखे, गाते पक्षी गीत,
पड़ती किरणें सूर्य की, बढ़ जाता है मीत.

*****

स्वयं प्रेम

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

स्वयं प्रेम की परिभाषा,
बस खुद से करें हम आशा.
स्वयं का रखें पूरा ख्याल,
खुद से पूछे खुद का हाल.

स्वयं से प्रेम है ईश्वर की भक्ति,
देती है यह हमारी आत्मा को शक्ति,
जिंदगी को गुजारे खुश रहकर,
स्वयं को बनाएं हर दिन बेहतर.

स्वयं पर करें पूरा विश्वास,
प्रेम से भरी हो हर एक सांस.
प्रेम,प्रसन्नता हो हमारा व्यवहार,
करें खुद को पूरी तरह से स्वीकार.

स्वयं से प्यार और विश्वास कभी न खोए,
हंसते रहे हमेशा कभी ना रोए.
दूसरों से वही व्यक्ति प्रेम कर सकता है.
जिसके स्वभाव में स्वयं के लिए भी प्रेम झलकता है.

निकाल देते हैं अपने अंदर से,
अहंकार और अभिमान.
हमारे जीवन में हो,
प्रेम और सम्मान.

कोई करे ना करे, पर खुद से मोहब्बत करते रहेंगे,
प्रेमानुभूति से हमारा जीवन भर देंगे.
कोई करे ना करे, पर खुद से मोहब्बत करते रहेंगे,
प्रेमानुभूति से हमारा जीवन भर देंगे.

*****

गाँव की भोर

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

मुर्गा करता कुकड़ूँ कूँ,
है उनका काम उठाना.

जगनू ग्वाले को देखकर,
बछड़े का काम रंभाना.

बछड़े की आवाज सुनकर,
गैया करती राग शुरू.

इधर बकरियों की में-में,
उधर शेरू का भोंकना.

बाबा के चाय की ख़ुशबू,
मुहल्ले भर को देती आमंत्रण.

अपनेपन की मिठास से बढ़कर,
नहीं कोई और निमंत्रण.

अब आती काम की बारी,
सब मिलजुल कर निपटाते.

चिड़ियाँ फुदकती आँगन में,
कृषक हल ले खेतों को जोते.

माँ बनाती है चावल की रोटी,
पौ फटने से पहले ही.

दादी के सिलबट्टे की चटनी,
मिल बाँट कर सब खाते.

खुशियों से होती भोर शुरू,
बच्चे भी जल्दी उठ जाते.

माँ के आँचल में छिपकर वे,
अपनी ठंड भगाते.

शीतल मंद बयार आती,
लेकर फूलों की ख़ुशबू.

भौंरें तितली संगी साथी,
कभी कबूतर की गूँटर गूँ.

पनघट की शोभा न्यारी,
होती गाँव की सुनहरी भोर.

सिंदूरी रंग से सजा आसमाँ,
खुशहाली फैले चहुँ ओर.

*****

केवट और साँप

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

एक गाँव में कार्तिक नाम का केवट रहता था. उसके नौ बच्चे थे. चार लड़के और पाँच लड़कियाँ. वह अपने परिवार का पालन पोषण मछली बेचकर करता था. कार्तिक प्रतिदिन मछली पकड़ने जाया करता था. नदी में जाल फेंक कर छोटी-बड़ी मछलियों को पकड़ कर लाता था. उन मछलियों को मछली बाज़ार में ले जाकर बेच देता था.

एक दिन वह मछली पकड़ने गया. नदी में जाल फेंका, लेकिन उस दिन उसे कम मछलियाँ मिली. कार्तिक मन ही मन सोचने लगा की इतनी कम मछलियों से काम नहीं चलेगा, मुझे और मछलियाँ पकड़नी होगी. वह नदी के किनारे बने बिलों में हाथ डालकर मछलियों को बाहर निकालने लगा और अपनी टोकरी में रखने लगा. तीन-चार बिलों के बाद जब पाँचवे बिल में उसने हाथ डाला तो मछली के भ्रम में एक साँप बाहर निकला. कार्तिक ने साँप को सिर के पास से पकड़ा हुआ था और डर के मारे थर-थर काँप रहा था. उसने आसपास मछली पकड़ रहे मछुआरों को आवाज़ लगाई. आवाज सुनकर मछुआरे इकट्ठा हो गए.

कार्तिक ने एक मछुआरे से कहा- 'सुनो! भाई तुम जल्दी से कुछ लकड़ियाँ ले आओ और उसमें आग जला दो.' उस मछुआरे ने वैसा ही किया. कार्तिक अपना हाथ आग के पास ले गया. साँप को आग की तपन महसूस हुई तो वह कार्तिक के हाथ में लिपट गया. कार्तिक को आग की आँच जब असहनीय हुई तब अपने हाथ को तेज गति से घुमाना शुरू कर दिया. कुछ समय घुमाने के बाद साँप को छोड़ दिया. साँप दूर जाकर गिरा. हाथ से साँप छूटा तब कार्तिक की जान में जान आई. वह पकड़ी हुई मछलियों को लेकर घर आ गया.

*****

प्यारा लगता मोर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल'

बहुत ही प्यारा लगता मोर,
मन को खींच ले अपनी ओर.

लंबे-लंबे हैं उसके पंख,
जो होते हैं रंगबिरंग.

सिर पर होता मुकुट सा मौर,
मन को खींच ले अपनी ओर.

जब-जब काले बादल छाते,
खुद को फिर वे रोक न पाते.

नाचता है, हो भाव विभोर,
मन को खींच ले अपनी ओर.

पीहू-पीहू की गीत वो गाता,
मोहक सरगम सुर सजाता.

फिर थम जाता जंगल का शोर,
मन को खींच ले अपनी ओर.

*****

पुस्तकें हमारी मार्गदर्शक

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

चर्चा तो हम अन्यान्य विषय के बारे में करते हैं, लेकिन जिनके सानिध्य में रहकर हम जिस ज्ञान-विज्ञान साहित्य के बारे में चर्चा करते हैं, उनको भूल जाते हैं. यह चर्चा का विषय है और मंच के द्वारा यह पहल सराहनीय है. पुस्तके हमारी जन्म जन्मांतर की सच्ची मार्गदर्शक है. हमारी मित्र है.जिनके सानिध्य में रहकर हम अपने आप को शिक्षित, संस्कारवान बना पाते हैं. पुस्तके हमें जीने की कला सिखाती है. पुस्तके हमें स्वावलम्बन बनाती है. पुस्तके हमें स्वाभिमान से जीना सिखाती है.पुस्तके हमें जीने का आधार बताती है. पुस्तके हमें पालन-पोषण करती है.

महात्मा गांधी जी ने इस सम्बंध में बहुत अच्छी बात कही है- "जो पुस्तके पढ़ते हैं जीवन मे कभी भूखे नहीं रहते."

पुस्तके हमें उस योग्य बनाती है कि हम देशकाल, वातावरण, समाज में अपने आप को स्थापित कर सकें. पुस्तकों को पढ़ने वाला व्यक्ति कभी जीवन मे हताश, निराश नहीं हो सकता. पुस्तके हमें सम्बल प्रदान करती है. पुस्तके पढ़कर हम अपने आप को विस्वास और आशा के प्रकाश से प्रकाशित कर पाते हैं. जो हमारे जीवन के लिए नितांत आवश्यक है. जीवन मे हम साकारात्मक सोंच को संचार कर पाते हैं.यह पुस्तके हमें अपनी मंजिल और लक्ष्य तक ले जाने में हमारी सहायता करती है.

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि पुस्तके हमारे जीवन मे विशेष महत्व रखती है.पुस्तकों के बिना हमारा जीवन निराधार है. इसके बिना जीवन की प्रगति उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती.

अतः यह पुस्तक सही मायने में हमारी सच्ची मित्र और मार्गदर्शक है.

*****

काले बादल

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

उड़ते-उड़ते काले बादल,
लगता जैसे माँ का आँचल.
जब बिजली चमके चमचम,
जड़े सितारें जिसे समझे हम.

रिमझिम-रिमझिम पानी बरसे,
मगन मयूरों के मन हरसे.

पेड़ झूमके खुशी मनाए,
जीव जंतु के मन हर्षाये.

मेघ बजाए ढम-ढम ढोल,
मेंढ़क गाये सुंदर बोल.

अँगना में छनके पायल.
उड़ते-उड़ते काले बादल.
उड़ते-उड़ते काले बादल.

*****

माथे का चंदन

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

रज-कण है माथे का चंदन,
ये भूमि है रत्नों की खान.

जन-जन करते माँ का वंदन.
चेहरे पर रखते हैं मुस्कान.

मिलजुल कर बढ़ाना है हमें,
अपनी मातृभूमि का मान.

इसके सम्मान के खातिर,
चाहे चली जाए जान.

आँच न आने देंगे कभी,
बढ़ाएँगे सदा इसकी शान.

निज सुख का त्याग करें,
देश है स्वर्ग से भी महान.

देश सेवा सबसे बड़ा धर्म,
बढ़ती रहे इसकी आन-बान.

विश्व में इसका परचम लहराए,
गाए सभी गौरव गान.

*****

सफेद दाग

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

कुछ दिनों से रितु के हाथों और पैरों में सफेद रंग के कुछ दाग उभरने लगे थे. वो पूरी आस्तीन के कपड़े पहनकर स्कूल आने लगी ताकि कोई देख न सके. आजकल वह चुपचाप रहने लगी थी. सहेलियों के साथ खेलती भी नहीं थी. बस चुपचाप एक जगह बैठी रहती, पढ़ाई में भी उसका मन नहीं लगता था. वह इन सफेद दागों के कारण परेशान रहने लगी थी. धीरे धीरे दाग बढ़ने लगे, चेहरे पर भी कहीं कहीं दिखाई देने लगे. अब दागों को छुपाना मुश्किल था. उसकी सहेलियाँ उससे दूर रहने लगी सब यही सोचते कि रितु को कोई बीमारी हो गई है. रितु निराशा के अंधकार में जाने लगी. घर वाले उसका इलाज करवा रहे थे, पर वह स्कूल जाना छोड़कर घर पर ही रहने लगी. उसकी लगातार अनुपस्थिति से उसकी शिक्षिका को चिंता होने लगी. उन्होंने बच्चों से कारण पूछा तो सबने चुप्पी साध ली. बड़ी मुश्किल से बच्चों ने जवाब दिया कि "रितु को बीमारी है मैम इसलिए वो स्कूल नहीं आएगी."

शिक्षिका ने बच्चों को समझाया कि सफेद दाग कोई बड़ी बीमारी नहीं है, रितु के दाग जल्दी ही ठीक हो जाएँगे. हम सभी उसके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे और उसको निराश नहीं होने देंगे.

शिक्षिका रितु के घर गईं; उससे बात की और उसे स्कूल आने ले लिए मना लिया. अब सभी बच्चे रितु के साथ अच्छा व्यवहार करने लगे.

*****

सोनू मोनू

रचनाकार- पेश्वर यादव

सोनू, मोनू दौड़े आओ,
साथ में गुब्बारे लाओ,
रानी बोली सब मिलकर,
खेलेंगे मुनिया.

खेल-खेल में सीखेंगे
रंगों की दुनिया.
नीला, पीला, लाल, गुलाबी,
सबके मन को भाये लाली.

हरा, भूरा, सफेद, आसमानी,
गुब्बारों से हम करेंगे मनमानी.
रंग-बिरंगों गुब्बारों को,
फूँक मारकर फुलायेंगे.

कुछ को हम फोड़ेंगे तो
कुछ को हम पिचकायेंगे.
हाथों से झुलाकर,
आसमान में उड़ाएंगे.

*****

स्नेह व्यवहार

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

आयुष दस साल का है. वह अपनी बड़ी माँ से बहुत प्यार करता है.उनकी हर बात मानता है. आयुष अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा है. उसकी माँ दिनभर अपनी नौकरी के कारण बाहर रहती है और पिता अपने काम में व्यस्त रहते हैं स्कूल से आकर आयुष घर में अकेला रहता है. उसका ध्यान खेलकूद में ही अधिक रहता है पढ़ाई पर वह कोई ध्यान नहीं देता. इस कारण उसकी माँ बहुत परेशान रहती. आयुष की माँ जब उसे पढ़ाने का प्रयास करती तब भी वह शैतानियाँ करता रहता.

एक दिन आयुष अपनी बड़ी माँ के पास जाने की जिद करने लगा तो माँ ने उसे तैयार कर दिया वह अपनी बड़ी माँ के घर गया. वहाँ सब लोगो ने बहुत मस्ती की, घूमे फिरे पिकनिक पर गए. आयुष बहुत खुश था उसकी बड़ी माँ भी आयुष का बहुत ध्यान रखतीं. उसके साथ समय बितातीं उससे खूब बातचीत करतीं उसे नई नई चीजों के बारे में बतातीं वह बहुत खुश हो जाता बड़ी माँ के दो बेटियाँ थीं जिनसे वह बहुत प्यार करता था. उनके द्वारा बाँधी राखी पूरे साल भर अपने हाथों में रखने का प्रयास करता दोनों बहने भी आयुष को बहुत प्यार करती थी. बड़ी माँ बच्चों के साथ खेलतीं, उनको समय देतीं इसलिए बच्चे भी उनकी बात मानते थे. दोनों बहनों को पढ़ाई करते देख और अपनी बड़ी माँ की बातें सुनकर पढ़ाई न करने वाला आयुष भी अपनी बड़ी माँ से पढ़ाने के लिए कहता. खेलने से पहले भी वह पढ़ने के लिए पूछ लेता था. अब उसका मन भी पढ़ाई में लगने लगा. अपनी बहनों से अब जब भी वह बात करता है तो पढ़ाई से संबंधित बातें जरूर करता है. अपनी माँ की भी बात मानता है.

बच्चों को स्नेह की आवश्यकता होती है उन्हें समय दें उनके साथ दोस्तों सा व्यवहार करें. बच्चों का व्यवहार स्वतः ही परिवर्तित हो जाता है.

*****

बालपन

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"

भोला भाला बालपन, खेल खिलौना सार.
सच्चे दिल की भावना, लेते तन आकार.

बचपन बीता खेल में, करते निश्छल भान.
बसते प्रभु दिल में सदा, सच्चाई गुणगान.

खेल कूद में है खुशी, पाते मोटर कार.
दादी दादा गोद में, बीता बचपन यार.

मात-पिता गुरुदेव की-चरणों में हो स्थान.
माता के आंचल तले, बने एक पहचान.

खेल खेल में सीखते,मन में रखकर चाह.
ले लो दृढ़ संकल्प तुम, बन जाते हैं राह.

बच्चा बचपन में जहाँ, काले तखती थाम.
अ,आ,इ,ई लिख पढ़ रहा, मानष पटल सुधाम.

मातृभूमि की आन में, बच्चे देश की शान.
भाषा अपनी हिन्द की, बच्चों रख लो मान.

कलम थामकर अब लिखो, जैसे किस्मत लेख.
जीवन में आगे बढ़ें, पढ़ लिखकर तो देख.

आओ बच्चों हम यहाँ, पढ़कर पाये ज्ञान.
देश हमारा है सदा, जग में ऊँचा नाम.

तुम जो चाहो बन सको, कलम है हथियार.
धीर वीर तुम साहसी, कर लो बाधा पार.

*****

हाय रे मोबाइल

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

हाय रे मोबाइल;
तुझे देख के,
बच्चे करें स्माइल.
हाय रे मोबाइल;

हाय रे मोबाइल;
जब हाथ में हो मोबाइल,
बदल जाती है बच्चे की स्टाइल.
हाय रे मोबाइल;

हाय रे मोबाइल;
छोटे बड़े के साथ है मोबाइल,
सबको देती हल्की-सी स्माइल.
हाय रे मोबाइल;
हाय रे मोबाइल;

*****

गणित की रोचक बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. कुछ संख्याएं ऐसी होती,
गिनने के जो आती काम
पहली संख्या 1 है बच्चों
तुम बतलाओ उनका नाम.

2. स्वयं या 1 से भाजित होती,
ऐसी संख्या अजब निराली
और किसी से नही है भाजित,
बोलो गुल्लो भोली भाली.

3. दो संख्याएं ऐसी आएं,
ठीक क्रम से बढ़ती जाएं.

4. रहूँ अकेले मूल्य नहीं है,
लगूं साथ तो मूल्य बढ़ाऊं,
भारत की इक खोज हूँ बच्चों,
तुरंत बताओ क्या कहलाऊँ?

उत्तर- 1. प्राकृतिक संख्याएं, 2. रूढ़ि संख्याएं, 3. क्रमांगत संख्याएं, 4. शून्य

*****

सूरज दादा

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

सूरज दादा, सूरज दादा,
रोज सवेरे जगते हो.
तुम जगते, औरों को जगाते,
बड़े भले तुम लगते हो.

सुबह गुनगुने धूप तुम देते
दुपहरी तपते-तपाते हो.
शाम ढले तुम घर को जाते,
तम का आभास कराते हो.

हो दूर भले ही नभ पर तुम,
पर साथ हमारे चलते हो.
नित पथ पर अग्रसर रहना,
तुम साहस हममें भरते हो.

तेरे जाने से फिर नभ पर
चमचम चंदा मामा आते हैं.
चुन्नू-मुन्नू,टोनू-मोनू सबको,
मीठी निंदिया दे जाते हैं.

*****

गरम-गरम समोसे

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

आलू के मसाले भर-भर,
मैदा के कपड़े पहनाये.
बड़े प्यार से हलवाई,
तेल से इनको नहलाये.

समोसे नहाये बड़े मजे से,
तेल में उछल कूद लगाए.
तब जाकर भूरे रंग समोसे,
खाने लायक हो जाए.

समोसे देख सभी बच्चे,
मुँह से लार टपकाये.
तीन पैरों के गरम समोसे,
बच्चों को खूब लुभाये.

समोसे की भीनी-भीनी सुगंध,
बच्चों के नासा तक आये.
गरमागरम मम्मी परोसे,
बच्चे जी-भर के खाये.

समारोह हो या हो त्यौहार,
समोसे से मेहमान नवाजी.
बच्चों संग बच्चे बने बड़े,
चटखारा लगाने होवे राजी.

*****

किसान

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सुबह-सुबह हर रोज, खेत में मैं हूँ जाता.
करता दिनभर काम, शाम को वापस आता.

खातू कचरा फेंक, और फिर साफ सफाई.
लेकर फसलें बीज, धान की भी बोवाई.

अच्छी मिट्टी देख, सभी फसलें मुस्काते.
नये-नये से धान, निकल कर उसमें आते.

गर्मी सर्दी धूप, पसीना माथ बहाता.
करता मेहनत रोज, बैठ कर तब हूँ खाता.

नागर बख्खर साथ, हाथ में उसको पकड़ूँ.
साधारण इंसान, किसी से मैं नहीं झगड़ूँ.

पालन पोषण आज, घरों का करता रखवाली.
मैं हूँ एक किसान, और अपना ही माली.

*****

माँ तेरे हाथों से बना स्वेटर

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

माँ तेरे हाथों से बना स्वेटर, इसमें ममता है, दुलार है.
माँ तुमने बनाया सुंदर स्वेटर, ये तेरा मेरे लिए प्यार है.

माँ ये सिर्फ एक स्वेटर नहीं तेरा, मेरे लिए स्नेह अपार है.
माँ तेरे हाथों से बना स्वेटर, मेरे लिए एक वरदान है.

ये मेरे लिए आशीर्वाद है, एक प्यार भरा सौगात है.
ये मुझे सर्दी से बचाता है, गरमाहट मुझमें लाता है.

माँ तेरे हाथ का बना स्वेटर, मेरे खूब काम आता है.
मैं जब-जब स्वेटर पहनता हूँ, माँ मुझे तेरी याद आती है.

जब स्वेटर मेरे पास होता है, तुम संग-संग मेरे चलती हो.
तुम ममतामयी महान हो, मेरे लिए तुम भगवान हो.

*****

अनजाने पौधे

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

फल बेचकर जीवन यापन करने वाला हरि लाल बगीचे से फल खरीदकर लाता और ठेले में फल रखकर गाँव-गाँव जाकर बेचता.

हरिलाल का एक ही लड़का था दीपक;

दीपक पढ़ने में बहुत अच्छा था. दीपक अपने पिता की तरह मेहनती और लगनशील था. शिक्षा ग्रहण करने दीपक गाँव से दूर सुनसान जगह में स्थित स्कूल में पैदल जाता आता था.

हरिलाल दीपक से बहुत प्यार करता था. दीपक जब स्कूल जाता उसके बस्ते में दो फल जरूर रखता.

दीपक फल खाते हुए स्कूल जाता और एक फल आते समय खाता. फल खाने के बाद बीज सड़क किनारे ही फेंक दिया करता था. यह सिलसिला चलता रहा.

समय बीता, अब दीपक उच्च शिक्षा पूरी कर शहर में नौकरी करने लगा. दीपक को अपने बचपन के दोस्त और स्कूल कि याद तो आती थी किंतु घर से दूर नौकरी के कारण गाँव आने का समय नहीं मिल पाता था.

एक दिन दीपक गाँव आया और अपने स्कूल गया तो देखा कि स्कूल की ओर जाने वाली सुनसान सड़क हरे भरे ,फल वाले पौधों से सजी हुई थी.

दीपक इन हरे भरे पेड़ पौधों को देख कर चकित हो गया और घर आकर अपने पिता को बताया. हरिलाल कहने लगा- बेटा, जब तू बचपन में स्कूल जाया करता था तब फल खाकर बीज सड़क किनारे फेंक दिया करता था. वही बीज आज हरे भरे विशाल वृक्ष का रुप ले चुके है.

पापा की बात सुनकर दीपक बहुत खुश हुआ.

*****

नववर्ष मनाएँ

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

नववर्ष सबके लिए बहार बन के आए.
साथ खुशियों का उपहार लेके आए.

सबका जीवन हो जगमग-जगमग.
नववर्ष सबके लिए संस्कार लेके आए.

इस नववर्ष सब गिले-शिकवे मिट जाएँ.
सब मिलकर सुंदर शुभ नववर्ष मनाएँ.

मन का अँधियारा चलो मिटाएँ.
हर्ष, उल्लास से नववर्ष मनाएँ.

नई उमंग नव एहसास जगाएँ.
आरस्य तज नव ऊर्जा संचार लाएँ.

सबको हिलमिल गले लगाएँ.
चलो खुशियों का नववर्ष मनाएँ.

*****

बच्चे मन के सच्चे

रचनाकार- ऋषि प्रधान

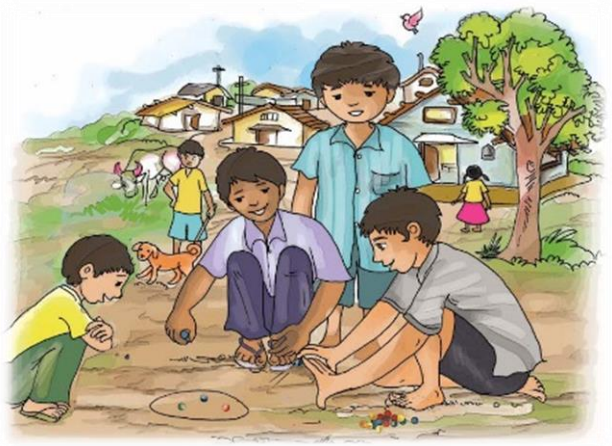

मुट्ठी में रेत से होते हैं बच्चे,
थोड़े से पक्के थोड़े से कच्चे.

सीखते हैं हमसे ही वो,
चाहे हो बुरे या फिर हो अच्छे.

मन का माहौल होता है सादा,
भरते हैं हम ही रंग पक्के या कच्चे.

माटी के लौन्धे होते हैं बच्चें
गढ़ना है उनको सुंदर और अच्छे.

करना है उनको उत्साहित दिखाना है राह सही,
क्योंकि बच्चे होते हैं मन के सच्चे.

सदा करना व्यवहार सही उन नन्हें फूलों संग
साफ और अच्छे, अच्छे ही अच्छे.

*****

प्रेरणा जीवन की

रचनाकार- सीमा यादव

सूर्य की एक-एक किरण से उज्ज्वलता की प्रेरणा मिलती है.
चन्द्रमा की शीतलता से शान्ति की प्रेरणा मिलती है.
धरती माता से सेवा की प्रेरणा मिलती है.

वृक्षों की छाया से सुख देने की प्रेरणा मिलती है.
नदी, तालाब और झरने के पानी से परमार्थ करने की प्रेरणा मिलती है.
पशु-पक्षियों से नित्य कर्म करने की प्रेरणा मिलती है.

*****

कौवा और हौवा

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

एक गाँव था. गाँव में किशना काका के घर दो मुर्गियां थी.उन मुर्गियों के चूजे थे.एक दो नहीं,पूरे पंद्रह चूजे थे.

मुलायम परों वाले, कुछ छोटे, कुछ बड़े चूजे. कुछ काले, कुछ भूरे और कुछ सफेद. सभी चूजे आँगन में सारा दिन एक-दूसरे के आगे-पीछे दौड़ते रहते.

वहीं आँगन के बाहर एक नीम का पेड़ था, बहुत पुराना और बहुत बड़ा.उस पर बहुत सारी चिड़ियाँ चहकती रहती थी.एक शैतान कौवा भी अक्सर वहाँ आ जाता था.वह चिड़ियों के घोसले गिरा देता.

एक सुबह सभी चूजे आँगन में भाग-दौड़ कर रहे थे.दोनों मुर्गियां आँगन से दूर कूड़े के एक ढेर से कीड़े-मकोड़े, दाने आदि खोज रही थी.किशना काका भी दड़वा बाहर से बंद कर खेत की ओर निकल गये थे.

तभी नीम पर काला कौवा आया. आज उसने मुर्गी के चूजों को खाने का मन बना लिया था.वह आँगन के बीचों-बीच आ गया. बेचारे चूजे डर गये.

वे सब परेशान भी थे कि इस कौवे से कैसे बचा जाए?कौवा बहुत खुश था,आज उसे मुर्गी के चूजों का स्वाद मिलेगा.वह खुशी में उड़कर नीम पर जाता और फिर उड़कर आँगन में आ जाता.

चूजों को डरकर यहाँ-वहाँ दौड़ते देखना उसे अच्छा लग रहा था. यह देखने के लिए कि चूजों की मुर्गियां माँ या किशना काका आसपास तो नहीं है, वह उड़कर नीम की शाखा पर जा पहुंचा.

किशना काका कहीं नहीं दिखे. मुर्गियों को बहुत दूर देखकर वह बेफिक्र हो गया.तब तक चूजों ने अपना दिमाग लगाया. आंगन के एक कोने में दीवार के सहारे सबसे नीचे पाँच बड़े चूजे बैठ गये.

फिर उनके ऊपर चार थोड़े छोटे चूजे बैठ गये.उन चार चूजों के ऊपर तीन छोटे चूजे बैठ गये.उन तीन के ऊपर उनसे छोटे दो चूजे बैठ गये.उन दो के ऊपर सबसे छोटा एक चूजा बैठ गया.

फिर कोशिश करके नीचे वाले पाँच खड़े हो गये. उनके ऊपर के चार भी खड़े हो गये.

फिर उनके ऊपर के तीन भी संबल कर खड़े हो गये.इशारा पाकर उनके ऊपर वाले दोनों चूजे भी संतुलन बना कर खड़े हो गये.सबसे ऊपर वाला छोटा चूजा भी जुगत लगा कर खड़ा हो गया.

अब उनका आकार किसी बड़े पक्षी जैसा लग रहा था.कौवा उड़कर खुशी-खुशी आँगन में आया. लेकिन वहाँ उसे चूजे नहीं दिखे. उसे तो वहाँ एक बड़ा सा हौवा दिखा.

ऐसा पशु-पक्षी उसने पहले कभी देखा नहीं था. डर के मारे उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी.वह डरकर काँव-काँव करता हुआ उड़कर दूर चला गया. और फिर कभी भी वह नीम पर वापस नहीं आया.

चूजों ने अपनी जुगत और साहस से कौवे को वहाँ से भगा दिया था. अब फिर चूजे बिना डरे आँगन में आगे-पीछे दौड़ लगाने लगे थे.

*****

पापा और मुनिया

रचनाकार- ऋषि प्रधान

पापा होते हैं बच्चों की दुनिया,
पापा की गोद में सर रख कर सोती है मुनिया.
पापा त्याग कर बनाते हैं बेटियों की दुनिया.

अपनी आँखों से आंसू बहाते,
ताकि बेटी देख सके उनकी आँखों से दुनिया.

पापा होते हैं तो घर में सारा सुख होता है,
पापा के एक रोज न होने से सबको कितना दुख होता है.

पापा के होने से बेटियों में कितना आत्मविश्वास होता है,
पापा से ही जीवन का हर दिन ख़ास होता है

पापा के होने से हर सपने का जुनून होता है,
घर से बाहर अकेली रहने वाली बेटी को भी पापा के नाम से सुकून होता है.

पापा हैं तो ऐसा लगता है कि दुनिया की हर ताकत मुझमे है,
मैं भी पापा को दूंगी दुनिया की हर खुशी ये हिम्मत मुझमे है.

बेटियों पर पापा के गर्व होने का इतिहास पुराना है,
बेटियों पर हमेशा करो गर्व क्योंकि अब बेटियों का जमाना है.

एक दिन विदा होकर बेटी पापा से दूर चल जाती है,
लेकिन बेटी भी दूर जाकर कहाँ पापा को भूल पाती है.

बेटी भी जाते जाते यह कह जाती है,
पापा तुम निराश न होना ये अमानत हमेशा तुम्हारी है.

*****

मोर बचपन अउ स्कूल

रचनाकार- ऋषि प्रधान

आमा के अमरैय्या मा,
गाँव के माटी- भुइयाँ मा.
खेलत- कूदत रहेन हमन
बोइर तरी के छइहाँ मा.

नीम तरी के छइहाँ मा,
नरवा के डहरिया मा.
कतका हमन नहावन जी,
हमर गाँव नान्हे तरिया मा.

स्कूल जाथन मजा उड़ाथन
अब्बड़ अकन खेलथन जी.
सब्बो झन मिलजुल के रहिथन
अब्बड़ पढथन लिखथन जी.

गुरुजी मन हमन ला पढ़ाथे,
हमन मजा ला करथन जी.
खेल -खेल में जम्मो झन
रंगोली ला भरथन जी.

स्कूल जाबोन रोज हमन
अउ अफसर बन जाबोन जी.
ये भुँइया के सेवा करके
अब्बड़ नाम कमाबोन जी.

*****

माँ का प्यार

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

लौटा दो माँ, मेरे बचपन का प्यार.
लौटा दो माँ, लौटा दो,
लौटा दो माँ, लौटा दो.

नहीं चाहिए मुझे कोई खुशी,
बस मेरा बचपन मुझे लौटा दो.
ना कोई गम, ना कोई जिम्मेदारी,
माँ का प्यार और दुलार बस लौटा दो.
माँ मेरे बचपन का प्यार लौटा दो,
लौटा दो माँ, लौटा दो.

नहीं सुनना किसी का नहीं होता बर्दास्त,
वह बचपन का प्यार, वह मेरी खुशी चाहिए.
वो खेलना, कूदना वह बचपन का यार.
लौटा दो माँ, मेरे बचपन का प्यार.
लौटा दो माँ, लौटा दो.

कोई जिम्मेदारी ना होती,
ना होती मैं किसी पर बोझ.
लौटा दो माँ, मुझे लौटा दो.

मेरे बचपन का प्यार,

आपकी गोद का प्यार.

मुझे लौटा दो माँ, मुझे लौटा दो,

मेरी प्यारी माँ मेरी प्यारी माँ.

*****

ठंड का मौसम

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

ऐसा ठण्ड का मौसम देखो,
ठण्डा-ठण्डा ये मौसम देखो.
ठिठुरते सब जन-जन.
सभी घुसे रहते कंबल के अंदर.
जीव-जंतु सब सूरज का करे इंतजार
जैसे-जैसे सूरज आता धरती पर.

सब जन बाहर निकल कर आते,
सभी धूप तापते ठण्ड भगाते,
ठंड से नदी, नाले, सरोवर सब जम जाते.

सूरज की किरणें धरती पर जैसे आता,
सब में एक साहस भर जाता.
तब जाकर सब काम में लगते,
ऐसा ठंड का मौसम देखो.

सब दुबके रहते अपने घरों पर.
जगह-जगह आग जलाते,
और तापते रहते सब लोग.
ऐसा ठंड का मौसम देखो.

ठंडी लहर की हवा जब चलती.
लग जाते हाथ पाव सब जमने,
ठंड से ठिठुरते सब लोग.
ऐसा ठंड का मौसम देखो.

सूरज भी देर से आता,
और जल्दी चला जाता.
ऐसा ठंड का मौसम देखो.
बच्चे, बूढ़े सब नहाने से कतराते,
ऐसा ठंड का मौसम देखो,
ऐसा ठंड का मौसम देखो.

*****

ठंड

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

सर्दी पड़ती जब जोर से,
लगती ठंडक तब भोर में.
रजाई सबको बड़ी भाती,
धूप भी मन को सुहाती.

जलता घर-घर अलाव है,
बैठ तापते सब ताव है.
आग तो सुखदायी लगती,
सर्दी भी है दूर भगती.

हल्दी दूध होता गुणकारी,
तुलसी पत्र भी चमत्कारी.
नुस्खा यह है बड़ा पुराना ,
बड़ें बुजुर्गों ने है माना.

नानी बताती यही दवाई,
अपनाते जो लोग है भाई.
सर्दी कभी पास न आती,
ठंड तो है आती जाती.

*****

हमारे आदर्श

रचनाकार- सीमा यादव

भगवान श्रीराम, माता सीता, भगवान श्रीकृष्ण, माता राधा, माता अनुसूया, माता अहिल्या, माता द्रौपदी, राजा हरिश्चन्द्र, माता सती, भगवान शिवजी, भक्त प्रहलाद, ध्रुव, स्वामी विवेकानंद, भगवान बुद्ध.ये सभी हमारे जीवन आदर्श हैं. इनके उच्च जीवन चरित को जानने का सतत् प्रयत्न हमें करना चाहिए. लव- कुश, एकलव्य, पाँचों पांडव की सेवाभक्ति, दानवीर कर्ण, आरुणि की गुरुभक्ति, परशुराम जी की पितृभक्ति, भरत जैसे उत्तम सेवा भाव वाले भातृप्रेम के बारे में अपने बड़े -बुजुर्गों से जानने की जिज्ञासा अवश्य होनी चाहिए.

प्रिय बच्चो, आप सभी गीली मिट्टी की तरह हैं. और हम सभी शिक्षक और आपके माता-पिता उस कुम्हार की भाँति हैं जो चाहे आपको जिस आकृति में बना लें और चाहे जिस भी रंग में रँग लें. आपकी बालबुद्धि में सदा अच्छी- अच्छी चीजों को ही जगह दीजिये. कभी कुविचार, कुबुद्धि का अनुसरण नहीं कीजिये. क्योंकि विचार ही आपके चरित्र का निर्माण करते हैं. अपने आस पास नजर डालें तो हमें बहुत से उदाहरण मिल जाएँगे. जिनके विचार अच्छे हैं, निश्चय ही वो ही सज्जन, सभ्य और संस्कावान बनते हैं, और जो गलत संगति करके गलत मित्रों के संग घूमते -फिरते हैं, उनका जीवन गर्त की ओर जाने लगता है.

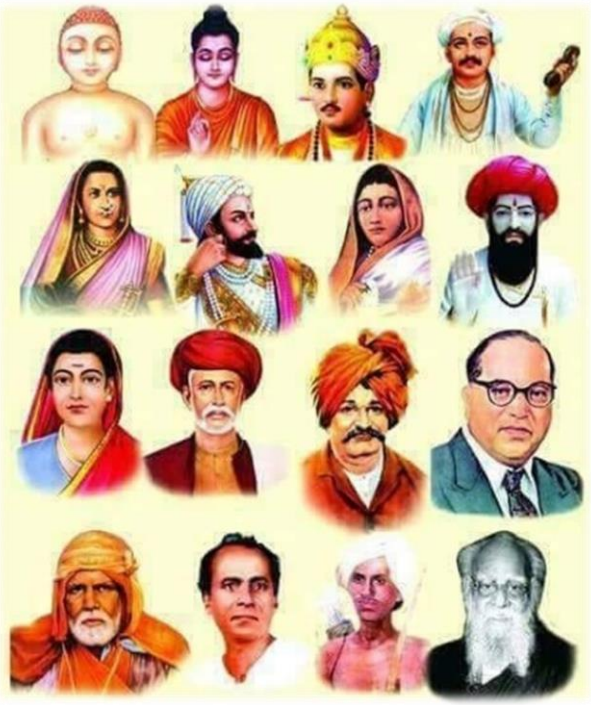

बच्चो, ये बात अब आपको अच्छी तरह समझ में आ गयी होगी कि किस प्रकार के विचार, संगति और सोच को अपने मन में जगह देनी है. यदि आपको दुविधा होती है, तो अपने शिक्षक, माता-पिता, दादा-दादी इत्यादि से मार्गदर्शन ले सकते हैं. इसके अलावा अच्छी अच्छी बातें, किताबों से भी स्वतः सीख सकते हैं.

*****

कैसे हम नूतन वर्ष मनाएं?

रचनाकार- विजय कनौजिया

नूतन वर्ष की आहट भी,
सहमी-सहमी सी लगती है,
हर चेहरे मुरझाए से हैं,
खुशियां भी सहमी लगती हैं.

बीते वर्ष का ज़ख्म अभी,
हम कब तक भर पाएंगे,
रोजी-रोटी है छिनी हुई,
बोलो कैसे मुस्काएँगे.

उम्मीदों का दामन भी तो,
हैं सिमट चुके हालातों से,
अपने अपनों से दूर हुए,
किसके संग खुशी मनाएंगे.

बच्चों का तो बचपना छिना,
हाथों से सबके हाथ छुटे
माँ की लोरी में दर्द छुपा
बच्चे कैसे सो पाएंगे.

है नए वर्ष में दुआ यही,
खुशियां सबको मिल जाएं,
हर चेहरे पर हों मुस्काने,
पहले जैसा सब हो जाए.
पहले जैसा सब हो जाए.

*****

मुलाकात

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

बारिश का मौसम था कुशांक सुबह स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था. तभी मम्मी की आवाज आई बेटा, रेनकोट रख लो, बारिश का मौसम है, कभी भी बारिश हो सकती है.

कुशांक माँ की बातों को नजर अंदाज करता हुआ रेनकोट लिए बिना ही स्कूल के लिए निकल पड़ा.

कुशांक रास्ते में ही था तभी मौसम बदलने लगा. तेज आँधी चलने लगी और बारिश भी होने लगी. कुशांक एक पेड़ के नीचे बारिश थमने की प्रतीक्षा करने लगा.

तभी उसने देखा कि एक दादा जी छतरी लिए, लाठी के सहारे चलते हुए आ रहे थे.

दादा जी ने कुशांक को अपनी छतरी के नीचे आकर पास में स्थित अपने घर की ओर चलने का इशारा किया. कुशांक ने उनसे बात करने की कोशिश की पर दादाजी उसकी बातों का उत्तर नहीं दे रहे थे. कुशांक को लगा कि दादा जी बहरे और गूँगे है. दादा जी के साथ साथ कुशांक उनके घर चला गया.

धीरे धीरे बारिश कम होने लगी. बारिश थमते ही कुशांक दादाजी का शुक्रिया अदा कर अपने घर की ओर चल पड़ा.

घर आकर कुशांक ने अपने मम्मी पापा को दादा जी से हुई मुलाकात के बारे में बताया.

एक दिन दादाजी सुबह-सुबह टहलने निकले थे तभी उन्हें दिल का दौरा पड़ गया. दादा जी मदद के लिए इशारा करते रहे. मोटर-गाड़ी और लोग आते-जाते रहे पर किसी ने दादा जी की मदद नहीं की.

कुशांक रोज़ की तरह स्कूल जाने निकला था. तभी उसकी नजर दादाजी पर पड़ी. दादा जी को देख कुशांक चौंक गया. बिना देर किए कुशांक लोगों की मदद से दादा जी को अस्पताल ले गया.

डॉक्टर ने दादा जी का इलाज किया जब दादाजी होश में आये तो कुशांक को देखकर मुसकुराए और इशारो में शुक्रिया अदा करने लगे.

*****

गीताली

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

नाम गीताली गीतों वाली,
खुशियों की वो प्याली है.
जब से आई घर आँगन में,
चारों तरफ खुशहाली है.

सोकर उठती,उठकर सोती,
मंद-मंद वो है मुस्काती.
भूख लगी तो रोती-गाती,
मम्मी को है पास बुलाती.

धीरे-धीरे चलना सीखती,
चलते-चलते रुक भी जाती.
कभी चलती,कभी दौड़ती,
उछल-कूद हरदम है करती.

हुई बड़ी जब गीताली बेटी,
सब कहते उसे प्यार से छोटी.
जाती स्कूल बना के चोटी,
खाती खूब वह चपाती रोटी.

*****

आजादी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

सोने के इस चिड़िया को,
अंग्रेजों ने जब देखा,
हुए लालायित पाने को,
जाल गुलामी का फेंका.

देश हमारा, सबसे प्यारा,
सोने की थी चिड़िया,
अंग्रेजों ने गुलामी की,
जंजीरों में जकड़ लिया.

गुलामी के जंजीरों में,
जकड़ा हुआ था जब भारत.
आजादी के लिए लड़ाई,
चलती रही तब अनवरत.

अंग्रेजों ने किसानों पर,
गजब जुल्म थे ढाये.
अन्न उगाते अन्नदाता,
पर हाथ नहीं कुछ आये.

अनाचार देख अंग्रेजों का,
वीरों का खून खौला,
एकजुट होकर वीरों ने,
अंग्रेजों पे हल्ला बोला.

देख भारतीयों की एकता,
अंग्रेज फिर घबराये.
फुट डालो और शासन करो
की नीति तब अपनाये.

जब तक रहे अंग्रेज वतन पर,
शोषण और अत्याचार किए,
देकर अपनी जान वीरों ने,
देश को अपनी आजाद किए.

*****

बेटा बेटी दोनों समान

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

खुदा ने तो इंसान बनाया,
इसमें न तुम मतभेद करो.
बेटा बेटी है दोनों समान,
इसमें न तुम भेद करो.

जिस राह पे रख सकते हैं,
बेटा अपना पहला कदम.
उसी राह पर रख सकते हैं,
बेटियां भी दमदार कदम.

बेटियाँ है संतान खुदा की,
कमजोर क्यों समझते हो.
बेटों को तुम आजादी देते,
बेटियों का हक़ छिनते हो.

आये ना कुछ काम बेटियाँ,
यह सोच अब बदलनी है.
मैदान ए जंग में बेटियां भी,
बेटों के संग अब लडती है.

संघर्ष के हर पथ पर देखो,
बेटों ने कई जख्म खाएं हैं.
इतिहास गवाह देता है देखो,
बेटियां ने तलवार उठाए है.

*****

किस्मत के भरोसे मत बैठो

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

जीवन पथ पर लड़ सकते हो,
आगे तुम भी बढ़ सकते हो,
त्याग दो आलस का दामन,
किस्मत के भरोसे मत बैठो.

मिला नहीं उसे ला सकते हो,
श्रम कर आगे बढ़ सकते हो,
जो चाहो तुम पा सकते हो,
किस्मत के भरोसे मत बैठो.

रगों में साहस भर सकते हो,
मुसीबतों से लड़ सकते हो,
दौड़ नहीं तो चल सकते हो,
किस्मत के भरोसे मत बैठो.

सूरज सा निकल सकते हो ,
लक्ष्य हासिल कर सकते हो,
इतिहास नया तुम गढ़ सकते हो
किस्मत के भरोसे मत बैठो.

*****

नाम है उसका...?

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

1. काले रंग का सुंदर पक्षी,
मधुर मधुर उनकी आवाज.
पेड़ों की ड़ाली में कुहकती,
देती सरगम का वाह साज.
नाम है, उसका?

2. आसमाँ का एक ऐसा पक्षी,
श्वेत वस्त्र वह धारण करती.
ध्यान मग्न में कोई ना दूजा,
मांसाहार वह सेवन करती.
नाम है, उसका?

3. पिंजड़े में बन्द ऐसा पक्षी,
तन हरा पर चोंच है लाल.
इंसानों की भाषा है बोलती,
भविष्य का वह बताता हाल.
नाम है उसका?

4. राष्ट्र का प्रतीक एक पक्षी,
भिन्न-भिन्न पंखों के रंग.
देव कार्तिक का वाहन पक्षी,
रहता हर दम उनके संग.
नाम है उसका?

5. वन उपवन में रहता पक्षी,
सभी पक्षीयों से बड़ा पक्षी.
उड़ान रहित अजीब पक्षी,
रेत में खुद को छिपाता पक्षी,
नाम है उसका?

1. कोयल, 2. बगुला, 3. तोता, 4. मोर, 5.शुतुरमुर्ग

*****

नमन

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

परमवीर थे जनरल विपिन,
दुश्मन को वे मारे गिन-गिन.
सर्जिकल हो या डोकलाम,
ऊँचा किए भारत का नाम.

सीने पर सजते थे सितारें,
शान वो थे हम सबके प्यारे.
शत्रु पर जब जब वो दहाड़े,
सबको सीमा पार पछाड़े.

नियति का ये खेल बुरा है,
सपूत ऐसे छीन क्यों लेती?
भारत माँ के संग हमेशा,
हम सब को दर्द है देती.

लाखों में इक होते हैं ऐसे,
दिल से हो जिनका सम्मान.
हे भारत माँ के वीर पुत्र,
नमन करे तुमको नादान.

*****

जीवन

रचनाकार- सीमा यादव

थका हारा वह मन
जाने कौन -सी दुनिया में
गुम हो गया है.

आने वाला पल और कल
कैसा होगा,यह सोच मन
विचलित-सा हो गया है.

तभी मन में यह विचार आया
कि हे नर,
तू क्यों ऐसा सोचता है?

क्या तुझे नहीं पता है?
यह जीवन पानी का बुलबुला है
जो हर -पल खत्म होता है.

*****

मिठू जी की शादी में

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह "नीहार"

मिठू जी की शादी में,
बजे नगाड़े ढोल.
सूटबूट नीली टाई,
पगड़ी गोल मटोल.

बेबी कोयल ने गाए,
मधुरिम मंगल गान.
सभी बाराती लगे नाचने,
सुन बुलबुल की तान.

मोरु भैया पंख खोलकर,
अपना हुनर दिखाते.
मुर्गा, तीतर और कबूतर,
नाच-नाच बल खाते.

प्यारी मैना सकुचाती-सी,
मन्द-मन्द मुस्काए.
बुलबुल करती हँसी-ठिठोली,
पल-पल उसे सताए.

*****

मेरी मम्मी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

मम्मी मेरी
बड़ी भली है.
उसकी बोली
मिश्री डली है.

मुझे सुनाती
रोज कहानी.
जिसमें होती
परी सुहानी.

मीठा-मीठा
दूध पिलाती.
मेरी मम्मी
मुझको भाती.

प्यार लुटाती
ख़ुशी जताती.
प्रिंसेस जैसी
मुझे सजाती.

मुस्काती तो
लगे कली है.
मेरी मम्मी
बड़ी भली है.

*****

थैला

रचनाकार- रजनी शर्मा

फल सब्जी और तरकारी.
रखता हूँ सामान भी भारी.

सिर्फ दो ही होते मेरे कान .
पर आता मैं सबके काम.

लंबा, छोटा, पीला, काला.
दिखूँ कभी मैं फूला-फूला.

कभी-कभी हो जाता हूँ मैला.
धुल कर बनू मैं उजला थैला.

कचरा कभी नहीं फैलाता मैं.
पर्यावरण सदा मैं बचाता हूँ.

मुझको तुम अपना लो भाई.
पॉलिथीन अब छोड़ दो भाई.

*****

गौरैया

रचनाकार- रजनी शर्मा

तोता, मैना, चिड़िया, गौरैया.
कहाँ गुम हुए तुम सारे भैया.
मेरे आँगन आओ ना गौरैया
दाना खूब तुम्हें देगी मैया.

गौरैया बोली दीदी-दीदी.
आँगन में नहीं है मेरी सहेली.
पेड़ तुमने तो कटवा डाले.
घोंसले भी मेरे उजाड़ डाले.

जल्दी से तुम पेड़ लगाना.
फिर सुनना तुम मेरा गाना.
हरे पेड़ पर झूमकर नाचूंगी.
तब दाना छककर मैं खाऊंगी.

*****

बरसात

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

सोंधी-सोंधी मिट्टी की अनमोल खुशबू,
जब चहुँ दिशा में इत-उत छा जाए.
पपीहा जब पीके,मोर मतवाला नाचे,
तब समझो मौसम बरसात का आए.

उमड़-घुमड़ कर काले बादल आए.
चमक-चमक दामिनी झलक दिखाए.
गड़-गड़, गड़-गड़ बादल जब गरजे.
सब बरसात का सुन्दर संदेशा लाए.

बूंद-बूंद अंबर जब अमृत बरसाए,
तब हरियाली का आँचल ओढ़ धरा,
नवयौवना का सुंदर रूप दिखाए.
धरती को सुंदरता बरसात दिलाए.

रिमझिम-रिमझिम फुहारों से भीग,
रेणु - रज जब सब पंक बन जाए.
कागज की नाव बना पानी में बहाए,
बच्चे कीचड़ में खेले अति हर्षाए.

बरसात के बीच जब भी सूरज आए ,
विपरीत दिशा सतरंगी इंद्रधनुष बनाए.
लहलहाती अपनी फसलों को देख,
अन्नदाता का मन गदगद हो जाए.

रिमझिम-रिमझिम बरसती बूंदों में,
बच्चे भीगें, नाचें-गाएँ अति हर्षाएँ.
सबके जीवन खुशहाली समृद्धि छाए.
जब उचित समय और माप में बरसात आए.

*****

फिर दिल ने उनको पुकारा है

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

फिर एक गहरा आघात लगा दिल को,
शहीद हो गये जो बहादुर वीर हमारे.
फिर दिल ने उनको याद किया,
फिर दिल ने उनको पुकारा है.

उनके शौर्य से सीना हमारा भी,
गर्व से कुछ और चौड़ा हो जाता है.
उनके यूँ चुपचाप चले जाने से,
दिल सबका भर -भर आता है.
फिर दिल ने उनको पुकारा है.

उनके आह्वान से वीरों में जोश आ जाता था.
उनकी अगुआई में मुर्दो में जान आ जाती थी.
जो दुश्मन के आगे सीना तान खड़ा हो जाता था.
आज फिर दिल ने उनको पुकारा है.

कर्म ही जिनके जीने का मर्म रहा.
देश को उनके हर फैसले पर गर्व रहा.
दुश्मनों के लिए जो अचल पहाड़ रहे.
सबके लिए खड़े बनकर ढाल रहे.
आज फिर दिल ने उनको पुकारा है.

याद कर उनको फिर आँखें नम हैं.
ये दर्द अब कहाँ होने वाला कम है.
किसी ने अरमानों पर गिराया बम है.
उनकी याद में आज हर आँख नम है.
लौट आओ, फिर दिल ने तुमको पुकारा है.

*****

नव वर्ष मनाये

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

देखो ये सब नाचें-गाएँ.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

इनकी जन्मधरा यह जंगल.
हर पल मंगल ही मंगल.
वाह! ठंडी हवा बहती जाए.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

हरे-भरे डोलते तरुवर.
सच में ये लगते मनोहर.
घास-फूस लता मुस्कुराएँ.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

लोमड़ बंदर ठुमके भालू.
शेर-चीते भी हो गये चालू.
हाथी दादा करतब दिखाए.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

कोयल मिट्ठू मैना मोर.
बंधे सब प्रेम की डोर.
गा-गाकर संदेश सुनाएँ.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

हम बच्चे इनसे सीखें कुछ.
दुनिया में होगी हमारी पूछ.
ये हमें बहुत कुछ सिखाएँ.
झूम-झूम नव वर्ष मनाएँ.

*****

अथक परिश्रम

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर "रवि"

स्वप्न देख आँखों में,
कर परिश्रम अथक तू.
सपना होगा साकार.

मंजिल मिल ही जाती है,
श्रम का दामन ना छोड़ना तू.
लेकर मन में उम्मीदों की आस,
कर परिश्रम अथक तू.
सपना होगा साकार.

चुन-चुनकर हँसी का,
गुलदस्ता साथ रखना.
विश्वास की आस को भी,
पास रखना.
क्षण-भर की आँधी से ना घबरा जाना तू.
कर परिश्रम तू.
सपना होगा साकार.

चींटियों की मेहनत से सीख लेकर,
आगे बढ़ते जाना तू.
कर परिश्रम अथक तू.
सपना होगा साकार.

परिंदों सी ऊँची उड़ान रखना तू ,
मन में हौसलों का अरमान रखना तू.
होगी जीत तेरी ही.
चेहरे पे सच्ची मुस्कान रखना तू.
कर परिश्रम अथक तू.
सपना होगा साकार.

*****

जाड़ अउ कुहरा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

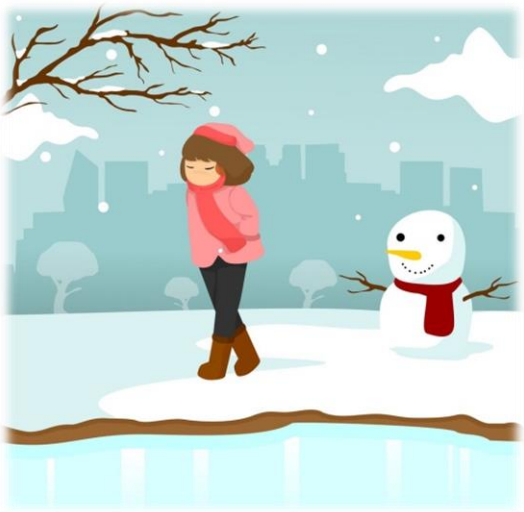

कथरी, कमरा, शाल ओढे,
लदलद जाड़ जनावय जी.
सरसर-सरसर हवा धुंकत हे,
जड़काला के दिन आगे जी.

अघन-पुस के जाड़ म संगी,
दाँत हर कटकटाथे जी.
मुँहु डहर ले कुहरा निकले,
गरम जिनिस हर सुहाथे जी.

सँझा बिहिनिया सित बरसे,
घाम तापे बर जिवरा तरसे.
चारो कोती कुहरा छागे,
जाड़ मा सब मनखे जडा़गे.

बारे अँगेठा अउ भुर्री ला,
तभो ले मनखे काँपे जी.
स्वेटर, मफलर शाल ओढ़ के ,
गोरसी मा आगी तापे जी.

जेन घाम हर गरमी मा,
सबो के परान छोड़ावय जी.
आज जाड़ म उही घाम हर,
सबो ला घाते सुहावय जी.

*****

गिनती

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"

एक चिड़िया आती है, मीठे गीत सुनाती है.
दो बिल्ली घर आतीं, छुप-छुप मलाई खातीं.

तीन बंदर बड़े शैतान, मारे थप्पड़ खींचे कान.
चार चूहे राजा आए, खीर ताज़ी-ताज़ी खाए.

पाँच हैं गिलहरी रानी, घूमने चले संग नानी.
छ: छछूंदर सब आए, छुक-छुक रेल बनाए.

सात समंदर पार कर, कविता पढ़ो गा कर.
आठ से आक्टोपस बने, सैनिक की बंदूक तने.

नवग्रह करते सुरक्षा, हम करें देश की रक्षा.
दस से बनती है दहाई, आओ गिनें गिनती भाई.

*****

बगिया लगती मालामाल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

हरे, गुलाबी, नीले, लाल ,
फूलों से बगिया खुशहाल.

फूलों संग कांटे भी मिलते ,
इसका उसको नहीं मलाल.

पंछी सुबह करते कलरव ,
उसमें होता एक सुरताल.

गीत सुनाती कोयल मीत,
तितली करती ख़ुशी बहाल.

महकते फूल गुलाबों के,
बगिया लगती मालामाल.

*****

इठलाती धूप

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

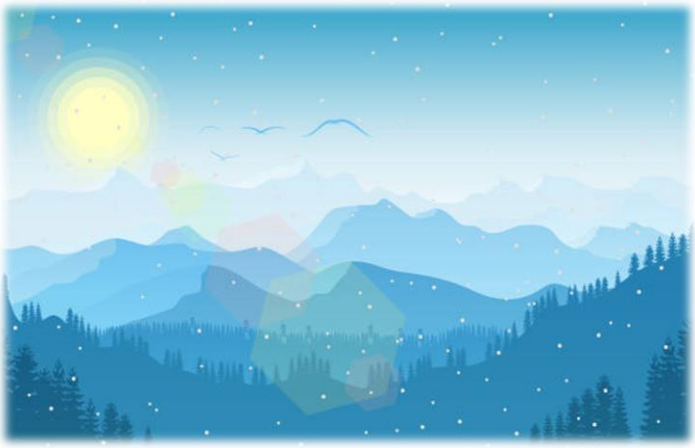

नरम गुलाबी भाती धूप ,
सरदी में इठलाती धूप.

शरद ऋतु में ठंडक जी से ,
राहत खूब दिलाती धूप.

देर से आती जाड़े में ,
फिर जल्दी उड़ जाती धूप.

बारिश बाद आसमान पर ,
इंद्रधनुष बन जाती धूप.

सूरज जी का सौम्य रूप ,
जाड़े में दिखलाती धूप.

जब नभ पर मेघ जी आते ,
तब गायब हो जाती धूप.

सरदी में भरकर मुसकान,
नरम गुलाबी भाती धूप.

*****

कौआ और बिल्ली

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बहुत पुरानी बात है. एक वनांचल गाँव से लगा हुआ एक बड़ा बबूल का पेड़ था. पेड़ पर एक कौआ रहता था. कौआ गाँव से खाने की जो भी वस्तु मिलती; पेड़ पर लाता, और आराम से बैठकर खाता था. दिन भर भोजन की तलाश में घूमता और शाम होते ही पेड़ पर लौट आता. इस तरह कौए का जीवन मजे से बीत रहा था.

एक दिन सुबह पेड़ के नीचे एक बिल्ली आई. देखा, कौआ अंगाकर रोटी का मजा ले रहा है. बिल्ली के मुँह में पानी आ गया. कौए के पास जाकर बोली- "कौआ भाई, इतनी सुबह तुम्हें कहाँ से गर्म रोटी मिल गयी.

"गाँव से लाया हूँ मैं इसे. बहुत अच्छी है." कौए ने कहा.

"तुम तो अकेले ही खा रहे हो. यह अच्छी बात नहीं है कौआ भाई." बिल्ली बोली.

"ठीक है; तुम भी खाओ." कौए ने रोटी का एक टुकड़ा बिल्ली के लिए नीचे गिरा दिया.

अब कौआ रोज चोंच में कुछ न कुछ दबा कर लाता; और पेड़ पर बैठकर खाता तो बिल्ली भी आ जाती. उसे भी मुफ्त में खाने मिल जाता था. इस तरह दोनों में दोस्ती हो गयी.

एक शाम की बात है. कौआ रोटी का एक बड़ा टुकड़ा लेकर पेड़ पर आया. रोटी बड़ी स्वादिष्ट थी; घी चुपड़ा हुआ था उसमें. मन भर खाया. बचे हुए टुकड़े को पेड़ पर एक कोटरनुमा जगह में छुपा दिया सुबह के लिए. कौए में यह प्रवृत्ति होती ही है. कुछ समय बाद बिल्ली आई. आते ही बोली- "आज एक घर में जी भर कर दूध पीया. मजा आ गया. क्या स्वाद था मित्र. मन तो कर रहा था कि तुम्हारे लिए भी ले आऊँ; पर लाते नहीं बना." कौआ बोला- "कोई बात नहीं. किसी दिन मैं खुद तुम्हारे साथ चलूँगा रोटी लेकर; फिर हम दोनों दूध-रोटी खायेंगे. "

"ठीक है भाई." बिल्ली गाँव की ओर लौटने ही वाली थी कि उसे घी की खुशबू आई. वह ठिठक गयी. बोली- "मित्र ! घी लगी रोटी रखे हो क्या; बड़ी खुशबू आ रही है?"

कौए ने कहा- "हाँ...हाँ...! मैंने खा ली है. पेट भर गया. एक टुकड़ा कल सुबह के लिए रखा है. कल सुबह आना मित्र, दोनों बाँटकर खायेंगे."

कौए की बात सुनकर बिल्ली का मन ललचा गया. न चाहते हुए भी बिल्ली गाँव की ओर निकल पड़ी.

बिल्ली गाँव में आ तो गयी, पर उसका मन घी वाली रोटी में ही लगा था. तीन-चार घंटे बीत गये. बिल्ली को नींद नहीं आ रही थी. बस करवटें बदल रही थी. उसका ध्यान बार-बार रोटी की ओर ही जा रहा था. अब तो नहीं रहा गया. वह पेड़ की ओर चल पड़ी.

बहुत रात हो गयी थी. बिल्ली ने देखा कि कौआ चुपचाप सो रहा है. बिल्ली की नीयत और बिगड़ने में देर न लगी. सोचने लगी कि अच्छा मौका मिला है. कौआ मुझे अंधेरे में देख नहीं पाएगा. रोटी लेकर चलती बनूँगी. फिर किसी घर में जाकर आराम से बैठकर खाऊँगी. बिल्ली पेड़ पर चढ़ गयी. रोटी की ओर लपकी. अचानक डाल हिल गयी. कौए की नींद खुल गयी. कौआ खतरे को भाँप गया. काँव-काँव चिल्लाने लगा. उसने बिल्ली को पहचान लिया. बिल्ली रोटी लेकर अंधेरे का फायदा उठाते हुए पेड़ से चम्पत हो गयी; उसने सोचा कि कौआ उसे नहीं पहचान पाया.

दूसरे दिन सुबह बिल्ली पेड़ पर फिर आई. बिल्ली को देखते ही कौए को गुस्सा आ गया. "तू भाग यहाँ से... नहीं तो मार डालूँगा." कौए की त्यौरी चढ़ी हुई थी.

"क्या बात है मित्र? बिल्ली अनजान बनती हुई बोली.

"तुम मित्रता के लायक नहीं हो. मित्र के साथ ही धोखा." कौए ने बिल्ली पर एक झपट्टा मारा.

बिल्ली ने इधर-उधर की बातें करते हुए अपनी गलती पर पर्दा डालने की बहुत कोशिश की; पर कामयाब न हो पायी. अब उसने जान बचाकर वहाँ से भाग जाना ही उचित समझा. बिल्ली दुम दबाकर भागने लगी. आगे-आगे बिल्ली पीछे-पीछे कौआ. भागते-भागते बिल्ली एक घर में जाकर छुप गयी. कौआ गुस्से से भरा था. उसने बिल्ली को उस दिन तो क्या; कभी माफ नहीं किया. तभी तो आज तक कौआ बिल्ली का पीछा कर ही रहा है; इसीलिए आज भी कौआ काँव-काँव करता हुआ बिल्ली को दौड़ाता है. बिल्ली को भागना पड़ता है.

*****

आओ हम अभिनन्दन करें

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आओ हम अभिनन्दन करें,
नूतन वर्ष के आगमन का.
आओ हम सब वन्दन करें,
पावन दिवस की वेला का.

आओ हम सब संकल्प करें,
स्व-विकास और उन्नति का.
आओ हम सब कमर कस लें,
राष्ट्र के उत्थान और प्रगति का.

आओ हम यह स्वीकार करें,
सत्य की राह पर चलने का.
आओ हम आत्मसात करें,
अहिंसा का पालन करने का.

आओ हम सब सम्मान करें,
सद्भावना और भाईचारे का.
आओ हम सब अंगीकार करें,
राष्ट्र व राष्ट्रीयता के नारे का.

नव-वर्ष एक नव-प्रेरणा है,
कुछ नया कर गुजरने का.
हम सारी कलुषता मिटा दें,
ये सन्देशा है गले मिलने का.

*****

आओ कुछ तन मन दान करें

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आओ हम तन-मन दान करें
आओ न कुछ तो उत्थान करें.
आओ हम.

यह देश हमारा है सबसे प्यारा,
इस जगत में है सबसे न्यारा.
आ जाओ कुछ बलिदान करें,
आ जाओ इसका सम्मान करें.
आओ हम ....

यह देश हमारा स्वाभिमान है,
और यही हमारा अभिमान है.
आओ तो इसका गुणगान करें,
इसकी महिमा का बखान करें.
आओ हम.

यह देश हमारे लिए महान है,
इसी से तो हमारी पहचान है.
इसके लिए भी कुछ दान करें,
इसके लिए भी कुछ भान करें.
आओ हम.

यह देश हम सब की माता है,
इससे जन्म-जन्म का नाता है.
माँ के लिए भी कुछ नाम करें,
इसके लिए भी कुछ काम करें.
आओ हम.

*****

ओ बचपन की मीठी यादें

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

ओ बचपन की प्यारी मीठी यादें,
ओ लड़ना-झगड़ना और फरियादें.
ओ मान-मनव्वल और झूठे वादे,
मुझे आज भी याद है.

ओ बचपन के निश्छल भोले मन,
ओ रहते हर पल पुलकित मगन.
ओ किलकारी भरते सदा तन-मन,
मुझे आज भी याद है.

ओ ईर्ष्या द्वेष से परे मीठी बातें,
ओ रह-रह के करते मुलाकातें.
ओ मिलके हंसते और मुस्कुराते,
मुझे आज भी याद है.

ओ निष्कपट मन मिट्टी की मूरत,
ओ भोला-भाला सलोना सा सूरत.
ओ रहते दिन-भर पल-पल फुर्सत,
मुझे आज भी याद है.

ओ शरारत करते सुहाने पल,
ओ पगडंडी में चलते निश्छल.
ओ इतराते इठलाते बीते कल,
मुझे आज भी याद है.

ओ गाँवों की संकरी गलियाँ,
ओ खेलते कंचे और गिल्लियाँ.
ओ आनन्द की किलकारियाँ,
मुझे आज भी याद है.

*****

आई है शरद ऋतु

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आई है शरद ऋतु छाई सिहरन है,
प्रकृति में दिखते छबि कण-कण है.
फूल-कली तरुवर दिखते मगन है,
हरे- भरे तृण में मोती कण-कण है.

बाग में बगीचों में रौनकता आई है,
चहुँ दिशा सुरभित सुषमा समाई है.
डाली-डाली विहंग वृंद चहचहाई है,
तरु में, तड़ाग में तटिनी उड़ आई है.

भोर सुरम्य दिखे छबि मनोहारी है,
ओस की बूंदें झलके बड़ी प्यारी है.
फाहों की उड़ती दिखे धरा सारी है,
हिम की धवल धरा दिखते न्यारी है.

जल में सरोवर में फूले दल कमल है,
करते भ्रमण अलि तितली निश्चल हैं.
लगे मनमोहक अतिशय छबि दल है,
करते मकरंद मधु पान में ये मचल है.

*****

हमारी देवनदी गंगानदी

रचनाकार- सीमा यादव

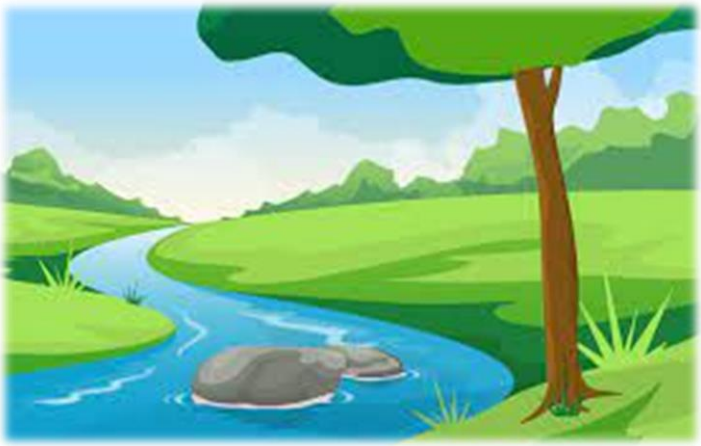

गंगा देवनदी है. इस पवित्र नदी का जल गंगाजल कहलाता है. गंगाजल पवित्रता और शुद्धता का द्योतक है. गंगाजल से न सिर्फ शरीर शुद्ध होता है, वरन मन का मैल भी धुल जाता है और अंतर्मन भीतर और बाहर से पवित्र हो जाता है. गंगानदी के तट पर बसने वाली नगरी और वहाँ पर रहने वाले नगरवासियों का यह सौभाग्य है कि वे नित्य गंगाजल से स्नान करके पवित्र हो जाते हैं और अपना जीवन सफल कर जाते हैं.

गंगानदी में हमारे पूर्वजों की आत्मा बसती है, उनमें हमारे पूर्वजों के दर्शन मिलते हैं. गंगानदी के जल में ऐसी चमत्कारिक शक्ति विद्यमान होती हैं कि हमारे तन -मन के सभी रोग समूल नष्ट हो जाते हैं. गंगानदी पवित्र भक्ति, तपोमय जीवन, निष्काम सेवा की प्रेरणा देती हैं. चाहे कोई कितना ही पापी क्यों न हो, गंगानदी का स्पर्श पाकर उनके सारे पाप मिट जाते हैं और वह व्यक्ति गंगाजल की तरह पवित्र हो जाता है. गंगाजल की बूँद मात्र से ही चित्त शुद्ध और निर्मल हो जाता है. गंगाजल अमृत का दूसरा रूप है. गंगाजल की पवित्रता का वर्णन नहीं किया जा सकता है. उनका उद्भव जगत के कल्याण के लिए ही हुआ है.

सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही देवनदी गंगा की धारा अविरल प्रवाहित हो रही है. निःस्वार्थ भाव से परहित करने वाली माँ गंगा आपको शत्-शत् प्रणाम एवं वंदन हैं.

*****

संस्कार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

जीवन कटुता त्याग दो, है सबका संस्कार.
बढ़े कदम आगे सदा, होगी कभी न हार.

अपनाओ संस्कार को, यही एक पहचान.
समता रखना साथ में, बनो नेक इंसान.

मात-पिता के सामने, जोड़े रखना हाथ.
भूल चूक को माफ कर, देते हरपल साथ.

सदा सत्य वाणी रहे, देना सब को मान.
संस्कारों में जो रहे, जीवन हो आसान.

बदले उस के भाग्य को, जिसके हो व्यवहार.
संस्कारों में जो पले, होती नैया पार.

*****

अगले जनम मोहे नारी ही कीजो

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

अगले जनम मोहे नारी ही कीजो,
दोबारा मेरे माता-पिता को, प्यारी सी बिटिया ही दीजो,
फिर चाहे हमेशा की तरह, हर एक मोड़ पर, मेरी लाख परीक्षा लीजो,
फिर भी मोहे, अगले जन्म नारी ही कीजो.

खुशियों से महका दू दोनों परिवार,
देश के लिए तत्पर खड़ी रह हर बार,
रानी लक्ष्मीबाई सा वार,
ना संहू कोई अत्याचार,
ना मानू जिंदगी से हार,
और लाऊं खुशियों की बहार.

वह सोनिया की जीत दीजो,
कल्पना चावला सा विश्वास दीजो,
वह किरण बेदी सी ताकत दीजो,
हां अगले जन्म मोहे नारी ही कीजो.

ऐश्वर्या सा आकर्षण दीजो,
पार्वती सा आदर्शन दीजो,
मदर टेरेसा सी करुणा दीजो,
मैरी कॉम सा प्रण दीजो,
अगले जन्म मोहे नारी ही कीजो.

*****

आपके यूँ चले जाने से

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

आपके शौर्य से गौरवान्वित,
हमारा यह देश हुआ.
आपके मार्गदर्शन से,
तीनों सेनाओं का पथ प्रशस्त हुआ.
हे डीसीएम जनरल बिपिन रावत,
आपको शत-शत नमन हमारा.
आपके यू चले जाने से,
पूरा भारतवर्ष आज स्तब्ध हुआ.

तुम्हारे शौर्य और पराक्रम से,
हिन्द का हर जवान प्रेरित हुआ.
आपके वीरता भरे दूरदर्शी निर्णयों से, देश लाभार्थ हुआ.
आपके शौर्य से जवानों का,
रोम-रोम रोमांचित हुआ.
आपके यूं चले जाने से पूरा
भारत वर्ष आज स्तब्ध हुआ.

आपके सफल प्रयासों से,
भारत का जग में ऊँचा हुआ.
सर्जिकल स्ट्राइक से,
भारत के वीरों ने नया आयाम छुआ .
आपके संचालन से जल, थल, वायु
सेना का नव आगाज हुआ.

आपके यू चले जाने,
पूरा भारत वर्ष आज स्तब्ध हुआ .

छलावा विधि का ये, या
किसी बहेलिया का क्रूर आघात हुआ .
या फिर धूर्त ड्रेगन का विषैला,
सर कोई उठा हुआ.
या यह पाक की नापाक कोशिशो,
का कोई जीत हुआ.
आपके यूं चले जाने से,
पूरा भारत वर्ष आज स्तब्ध हुआ.

आपके हर पराक्रम भरे निर्णय ने,
हर वीर के दिल को छुआ.
आपकी याद में आज जन-जन का
रोम-रोम रोमांचित हुआ.
आज यह जो कुछ भी हुआ
यह कुछ भी अच्छा नहीं हुआ .
आपके यू चले जाने से
पूरा भारत वर्ष आज स्तब्ध हुआ .

*****

सूरज और बादलों की लड़ाई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

जून का महीना था. सूरज खूब तप कर आग बरसा रहा था. पेड़-पौधे, जलचर, जानवर, पक्षी, मनुष्य सभी इस गर्मी से व्याकुल नजर आ रहे थे. इस भीषण गर्मी में बादलों ने सोचा- चलो जल बरसा कर सबको भीषण गर्मी से राहत तो दी जाए. ऐसा सोच कर बादलों ने इकठ्ठा हो कर जल बरसाना चाहा, पर यह क्या? उनका सारा पानी सूरज पी जा रहा था. सूरज की दादा-गिरी देख कर सारे बादल परेशान हो गए. मगर बादल भी कहाँ हार मानने वाले थे. एक रोज बादलों ने मिल कर सूरज पर आक्रमण कर दिए और बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़े ला कर सूरज पर बरसाने लगे. बर्फ की मार खा कर सूरज परेशान हो गया और बादलों से बोला तुम सब मुझे बर्फ के टुकड़ो से क्यों मार रहे हो? मेरा कसूर क्या है? बताओ तो सही. सूरज की बात सुनकर बादल बोले हम नहीं बताएंगे, जब तक हम तुम्हारा घमंड़ तोड़ कर चकना चूर नहीं कर देंगे. बादलों ने सूरज पर बर्फ के टुकड़े बरसाना नहीं छोड़ा.

सूरज अपनी जान बचाने के लिए भाग कर भगवान इन्द्र देव के पास पहुंचा और बोला- भगवान आप हमें इन बादलों से बचा लीजिए, वर्ना यह हमारी जान ले लेंगे. भगवान इन्द्र देव बोले सूरज तुम्हें अपनी तेज पर बहुत घमंड़ हो गया है. रोज पृथ्वी पर आग बरसा रहे हो. वहाँ के सारे जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, जलचर, जानवर, पक्षी, मनुष्य तुम्हारी गर्मी से कितने परेशान हैं. यह तुमने कभी देखा. अब तुम्हें हम नहीं बचा सकते है. तुम जहाँ जाओगे बादल तुम्हारा पिछा नहीं छोड़ेगे. इतना कह कर इन्द्र देव खामोश हो गए.

सूरज अपनी जान ले कर ब्रहमा जी के पास पहुंच कर बोला- भगवान आप के शरण में आया हूँ, मुझे आप इन बादलों से बचा लिजिए. यह हम पर बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़े फेंक कर हमसे बेकार में लड़ाई कर रहे है. आप हमारी रक्षा कीजिए भगवान. खामोश अब तुम्हारी कोई रक्षा नहीं कर सकता है. तुमने धरती के सभी पेड़-पौधों, जलचरों, जीव-जन्तुओं, जानवरों, पक्षियों और मनुष्यों पर बहुत कहर बरसाए हो. मैं चाहू तो तुम्हें

अभी भष्म कर के तुम्हारी जीवन लीला समाप्त कर सकता हूँ. मगर मैं ऐसा नहीं करूंगा. मैं तुम्हें श्राप देता हूँ, आज से तुम्हारी तपने की गर्मी आधी से भी कम हो जाएगी. तुम बदलों का पानी पी कर उन्हें जल बरसाने नहीं दे रहे थे. आखिर बादलों को भी हमने ही बनाया है. तुम्हें अपने आप पर बड़ा घमंड़ हो गया है इसलिए बादलों ने तुमसे लड़ने की मन में ठान ली. तुमसे तो अच्छा तेरा भाई चंद्रमा है जो हमेशा शीतलता बरसाता रहता है. बादलों तुम सब सूरज पर बर्फ बरसाना बन्द कर के इसे जाने दो और तुम सब पृथ्वी पर इताना जल बरसाओ कि पृथ्वी सूर्य की गर्मी से मुक्त हो जाए. इतना कह कर ब्रहमा जी खामोश हो गए. ब्रहमा जी की बात मान कर सारे बादल सूरज से लड़ना बन्द कर के पृथ्वी पर जल बरसाने के लिए चल दिए. सूरज का घमंड़ टुट कर चकना चूर हो गया. पृथ्वी पर जल की बरसात होते देख कर सारे पेड़-पौधे, जलचर, पशु-पक्षी, जानवर और मनुष्य बादलों की जय जय कार करने लगे और खुशी से नाचने गाने लगे.

*****

नए साल में हुआ धमाल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

खुशियाँ ले के आया साल,
चीकू मीठी हुए निहाल.

मीठा सबने खाया खूब,
देखो भैया भर भर थाल.

आया जाड़ा मार दहाड़,
बोला सबके सब ओढ़ो शाल.

फूल खिले बाग में अनगिन,
मौसम ने क्या किया कमाल.

ख़ुशी से नाची तिथी तृषा,
नए साल में हुआ धमाल.

*****

चिड़िया रानी

रचनाकार- सीमा यादव

चिड़िया रानी चीं -चीं -चीं-चीं करती है,

मीठी बोली से सबका मन हर्षित करती है.

फुदक -फुदक कर चहचहाती है,
खूब कड़ी मेहनत करके खाती है.

आलस कभी भी नहीं करती है,
सबके मन को खुश रखती है.

तिनका -तिनका संचित करके अपना सुन्दर घोंसला बनाती है,
और सबको पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दे जाती है.

चिड़िया रानी सीधी- सादी बड़ी प्यारी लगती है,
अपने बच्चों का बड़ी खुशी से लालन पालन करती है.

*****

भारत माता

रचनाकार- एड. किशन भावनानी

भारत माता की गोद में एक से बढ़कर एक अनेक ऐसी ख़ूबसूरत उपलब्धियां, हजारों वर्ष पूर्व से उपलब्ध है जिनकी अणखुट संरचना, प्राकृतिक ख़ूबसूरती, विशाल भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं के साहित्यग्रंथों सहित अनेक अपार क्षमता वाली बौद्धिक संपदा का विशाल भंडार देख संपूर्ण विश्व हैरान था, जिस पर नज़र लग गई थी, जिससे हजारों वर्षो की गुलामी से आजादी के बाद 1947 में भारत का विभाजन हुआ. साथियों, फ़िर भी हम अपनी मेहनत, लगन से फिर अपनी ताकत, जज़बे और जांबाज़ी के साथ वैश्विक पटल पर प्रमुख हस्ती के रूप में अपने हर क्षेत्र की समृद्धि व ताकत के आगाज़ के साथ वैश्विक पटल पर अहम स्थान रखते हैं, जिसे देखकर विश्व की नजरें फिर भारत की ओर आकस्मिकता से देख भारत का लोहा मान रही है. आज भारत उस स्थिति में है जहाँ भारत की ओर नज़र लगाने वाले को हज़ार बार सोचना पड़ेगा, यह है हमारा आज का भारत.

साथियों बात अगर हम अपनी संस्कृति, विशाल मातृभाषा और भारतीय भाषाओं के साहित्यग्रंथों की करें तो यह हमारी पहचान है. यूं तो भारत में बाइस भाषाओं को संविधान में मान्यता दी गई है परंतु पूरे भारत की बात करें तो यहाँ भाषाएँ व उपभाषाएँ हजारों की संख्या में होंगी, जिसकी रक्षा करना और विलुप्तता से बचाने की ज़वाबदारी हमारे आज के युवाओं के ऊपर है क्योंकि आज हमारे देश की 68 प्रतिशत आबादी युवा है और इस युवा भारत के युवाओं को ही हमारी संस्कृति, भाषाओं को जीवित रखना है. इसलिए हमें अपनी मातृभाषा को महत्व देना होगा और अपने समाज, घर, क्षेत्र में अपनी मातृभाषा में बात करना होगा ताकि उसे हम विलुप्तता से बच सके.

आज इसकी ज़रूरत इसलिए पड़ गई है, क्योंकि आज के बदलते परिवेश में हमारे देश में पाश्चात्य संस्कृति का प्रचलन कुछ तेज़ी से बढ़ रहा है. खासकर के युवाओं में इसका क्रेज अधिक महसूस किया जा रहा है जो बड़े शहरों से होकर अब हमारे छोटे शहरों, गांवों में भी फैलने की संभावना बढ़ गई है. जिसका संज्ञान बुजुर्गों को लेना होगा और युवाओं को अपनी मातृभाषा में बोलने, संस्कृति, साहित्यग्रंथों, भाषाओं की तरफ ध्यान आकर्षित कराकर उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन देना होगा ताकि भारतीय धरोहर को विलुप्तता से बचाया जा सके.

हमनें इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से कई बार देखा, पढ़ा व सुना है कि हमारे माननीय उपराष्ट्रपति का संज्ञान इस भाषाई क्षेत्र की ओर बहुत अधिक है. वे हर मौके पर इस दिशा में सुझाव, मार्गदर्शन, अपील प्रोत्साहन देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते जो काबिले तारीफ है. साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति की दिनांक 12 दिसंबर 2021 को एक विश्वविद्यालय में स्थापना दिवस समारोह को संबोधन करने की करें तो पी आई.बी के अनुसार उन्होंने इस संबंध में विश्वविद्यालयों से भारतीय भाषाओं में उन्नत अनुसंधान करने तथा भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली में सुधार लाने का सुझाव लाने की अपील की, जिससे कि उनकी व्यापक पहुंच तथा शिक्षा क्षेत्र में उपयोग को सुगम बनाया जा सके. उन्होंने आज विभिन्न भारतीय भाषाओं में साहित्यिक ग्रंथों के अनुवादों की संख्या बढ़ाने के लिए सक्रिय तथा ठोस प्रयासों की अपील की. इस संबंध में उन्होंने क्षेत्रीय भारतीय साहित्य की समृद्ध धरोहर को लोगों की मातृभाषाओं में सुलभ कराने के लिए अनुवाद में प्रौद्योगिकीय उन्नति का लाभ उठाने का सुझाव दिया. यह देखते हुए कि भूमंडलीकरण का व्यापक प्रभाव है, उपराष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि यह अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि युवा अपनी सांस्कृतिक विरासत से संपर्क बनाए रखे. पहचान बनाने तथा युवाओं में आत्मविश्वास को बढ़ावा देने में भाषा के महत्व को देखते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को अपनी मातृभाषा में बोलने में गर्व का अनुभव करना चाहिए. बाद में, उन्होंने भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा विश्वविद्यालय में आयोजित एक भारत श्रेष्ठ भारत की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन किया. आगन्तुक पुस्तिका में लिखने के दौरान उन्होंने तेलंगाना और हरियाणा के जोड़ीदार राज्यों की संस्कृति को प्रदर्शित करने में आयोजकों के प्रयासों की सराहना की. लोगों को प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने लिखा कि ऐसी पहलें जोड़ीदार राज्यों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रचारित करने तथा लोगों के बीच आपसी संपर्कों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी. उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का लक्ष्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना तथा बच्चों की मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना है. उन्होंने कहा कि अनिवार्य रूप से उच्चतर शिक्षा तथा तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए भी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत से संपर्क बनाए रखना अत्यंत ज़रूरी है उनको अपनी मातृभाषा में बोलने पर गर्व का अनुभव होना चाहिए तथा भारत ख़ूबसूरत मानवीय बोलियों, भाषाओं का विश्वप्रसिद्ध संगम है जिसे संजोकर रखने का हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है.

*****

क्या वक़्त था

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

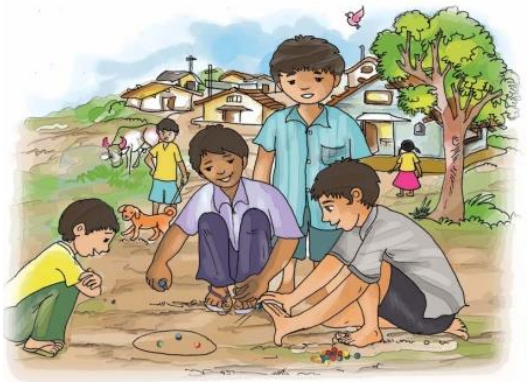

आज से कई गुना अच्छा,

तो गुजरा हुआ हमारा

बचपन का जमाना था.

कंक्रीट की दीवारों में

भावनाओं का सीलन नहीं होता

खपरैल की छत की तरह

हवेलियों में वो सुकून कहीं नहीं.

चूल्हे की आग में सिंकती थी रोटियाँ

उसके स्वाद में लूटा दूँ मैं

सैकड़ों हीरे मोतियाँ

माँ की हाथों में जो लज्जत है

ओ दुनिया में कहीं नहीं.

सिलबट्टे से पिसी चटनी में

हरी धनिये की महकती खूशबू है

वो जमाने में कहीं नहीं.

भाई बहनों के संग

झगड़ते थे, रोटियाँ की पपच्चियों के लिए

वो प्यार, वो शरारत

सारे जहाँ में कहीं नहीं.

कुंइयां की पानी जैसा

मिनरल्स वाटर में नहीं रहा स्वाद

आजकल लोगों के लहजों में

वो मिठास कहीं नहीं.

ढूँढने से भी नहीं मिलते अब

वो अपनापन और स्नेह

बड़े हो जाने के बाद वो खुशियाँ

मिलती कहीं नहीं.

*****

भारत

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

दक्षिणी एशिया का

सबसे बड़ा देश है हमारा भारत,

कृषि प्रधान देश है भारत,

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है भारत,

एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य सविधान घोषित करता है हमारा भारत.

वर्तमान में 28 राज्यों तथा 8 केन्द्रशासित प्रदेशों में बँटा हुआ है भारत,

भाषाओं में विश्व के समृद्धतम

देशों में से एक है भारत,

भारतीय आस्ट्रेलियाई प्लेट का उपखण्ड के ऊपर स्थित है भारत.

मुद्रा स्थानांतरण की दर से,

अर्थव्यवस्था विश्व में दसवें और क्रयशक्ति के अनुसार तीसरे स्थान पर है भारत.

चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है भारत,

फिल्म उद्योग, दुनिया की सबसे ज्यादा देखी जाने वाली सिनेमा का उत्पादन करता है भारत.

भौगोलिक रूप से एशिया महाद्वीप के

दक्षिण में स्थित है भारत,

कई भाषाएँ, कई धर्म, कई त्यौहार,

कई ऋतु और कई रंग से भरा है भारत.

कई भाषाएँ, कई धर्म, कई त्यौहार,

कई ऋतु और कई रंग से भरा है भारत.

*****

तिरंगा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

भारत की पहिचान तिरंगा
जनगणमन की शान तिरंगा.

केसरिया, सफेद, हरा है
जग में है द्युतिमान तिरंगा.

विद्यमान है जल-थल-नभ में
गाता है जयगान तिरंगा.

सीमाओं पर रक्षा करते
वीरों का अभिमान तिरंगा.

त्याग - समर्पण भाव जगाता
सिखलाता बलिदान तिरंगा.

कभी देश को आँच न आए
देता है वरदान तिरंगा.

देश-धर्म पर बलि-बलि जाएँ
करता है आह्वान तिरंगा.

व्रती और कर्मठ जन-जन से
चाह रहा सम्मान तिरंगा.

*****

जीवन

रचनाकार- ब्रीजभान टंडन

यह जीवन है जब तक,
गिरेंगे नहीं तो उठेंगे कैसे.

जब तक खुद समझेंगे नहीं,
तो औरों को समझाएंगे कैसे.

जब तक कुछ अलग ढूंढेंगे नहीं,
तो कुछ नया पाएंगे कैसे.

जब तक दरवाजा खटखटाएंगे नहीं,
तो नए राह के दरवाज़े खुल् पाएंगे कैसे.

जब तक गरीबी का एहसास करेंगे नही,
तो अमीर बनने के लिए कदम बढ़ाएंगे कैसे.

जब तक हाथ बढ़ाएंगे नहीं,
तो किसी से नये सम्बंध बनायेंगे कैसे.

जब तक औरों का सम्मान करेंगे नहीं,
तो हम खुद सम्मान पाएंगे कैसे.

*****

संविधान

रचनाकार- ब्रीजभान टंडन

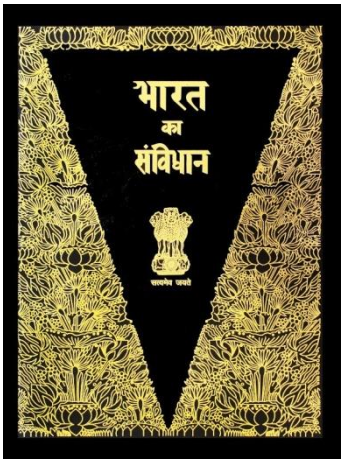

बाबा साहब अंबेडकर रहे तै भारत के शान
दलित, शोषित, पीड़ित ला अधिकार दिलाये बर लिखे तै संविधान.

पग पग परिश्रम करे तै
इंसान म इंसानियत जगाये बर
शिक्षा के ज्योति म तन ला तपाये तै

अज्ञानता के कलंक मिटाए बर
संगर्ष करके जीवन में रचे तै भारत में इतिहास
धर्म युद्ध के लड़ाई लड़के कुरीति के करे तै विनाश.

सामाजिक विषमता ला दूर करे बर
समानता के बीड़ा उठाये तै
भर साहस विश्वास के अकेला कदम बढ़ाये तै.

भारत के माटी म जन्म लेके
बढ़ाये तै हमर शान
तोर असन महापुरुष पाके
बढ़गे भारत के सम्मान.

सादा जीवन उच्च विचार रहिस बाबा तोर हथियार
दीन हीन के मसीहा बनके मिटाए तै हमर जीवन के अंधियार
सामाजिक आर्थिक क्षेत्र म लड़ाई लड़के
देश बर देहे तै योगदान.

सौ बार जन्म लेके भी तोर ऋण ल
नई चुका पावय हिन्दुस्तान.

*****

सुंदर पुष्प

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

लाल,नीले,बैंगनी सब, आज मन को भा गये.

पुष्प सुंदर लग रहे हैं, बाग में सब छा गये.

देख के इस पुष्प को जी, राग भौंरे गा रहे.

मंद सी मुस्कान लेकर, बाग में सब आ रहे.

शीत बरसे मेघ से जब, मोतियाँ बन जा रही.

फूल से खुशबू निकल कर, बाग को महका रही.

रंग इसका प्रेम का है, ईश को मोहित करे.

हाथ जिसके आय जब वो, प्रेम से मन को भरे.

*****

तितली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

पास हमारे
प्यारी तितली आओ
हाल सुनाओ

क्या कहती हो
कलियों के कानों में
हमें बताओ

पंख तुम्हारे
रंग बिरंगे प्यारे
पास तो आओ

घूम रही हो
वन - उपवन में
हमें घुमाओ

पढ़ - लिख लो
कुछ साथ हमारे
मस्ती से गाओ

रूठ गयी है
नन्हीं - मुन्नी गुड़िया
जरा हँसाओ

*****

दो बिल्लियाँ

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गोपाल सुबह सो कर उठा तो उसके कानों में बिल्लियों की रोने की आवाज सुनाई पड़ी. वह घर से बाहर निकल कर आया तो देखा बाहर सड़क पर दो बिल्लियाँ बैठी रो रही थी. तभी मोहल्ले के कई बच्चें दोनो बिल्लियों को देखने आ गए. गोपाल के दोस्त ओम् ने कहा गोपाल भैया लगता है किसी ने अपने घर से निकालकर इन बिल्लियों को सड़क पर छोड़ गया है. मुझे तो लगता है यह बिल्लियाँ बहुत भूखी हैं तभी इतना जोर-जोर से रो रही है. तुम ऐसा करो इन बिल्लियों को उठा कर घर में ले जाओ और दूध पिला कर छोड़ देना. मैं क्यों ले जाउं, इतनी दया आ रही है,तो तुम इसे अपने घर ले जाओ. यार गोपाल तुम तो बेकार में नाराज हो गए. तुम नहीं ले जाओगे तो मैं ही ले जा रहा हूँ. मैं इसे अपने घर में पालूंगा. जब बड़ी हो जाएंगी तो छोड़ दूंगा. इतना कह कर ओम् बिल्ली के दोनो बच्चों को उठा कर अपने घर की ओर चल दिया.

घर में पहुंचते ही ओम् की मम्मी ओम् को डांटती हुई बोली अरे यह कहाँ से मुसीबत उठा लाया? जाओ इसे जहाँ से लाए हो वहीं छोड़ आओ. तभी घर में रहने दूंगी. मम्मी तुम क्यों नाराज हो रही हो, दोनों बच्चें बहुत भूखे है. पहले एक कटोरे में हमें दूध दो ताकि दोनों बच्चों को पिला सकूं. देखो इन्हें दूध पिला कर छोड़ आना. इतना कह कर ओम् की मम्मी ने एक कटोरा भर दूध ला कर दोनो बिल्लियों के सामने रख दिया. दोनो बिल्लियों ने दूध को गटर- गटर पीना शुरू कर दिया. देखते ही देखते कटोरे भर का दूध दोनो बिल्लियों ने मिल कर पी डाला. पेट भर जाने से दोनो बिल्लियों ने रोना बन्द कर दिया. तभी गोपाल वहाँ आ कर बोला ओम् तुम इन दोनो बिल्लियों को हमें दे दो हमारी मम्मी ने कहा है हम इसे पालेंगे. इतना सुनना था कि ओम् बोल पड़ा गोपाल भाई तुम दोनो बिल्लियों को खुशी-खुशी अपने घर ले जा सकते हो. गोपाल दोनो बिल्लियों को ले कर अपने घर चला आया और उसे पालने लगा.

एक सप्ताह में दोनो बिल्लियाँ पहले से ज्यादा तंदुरूस्त हो गई और घर से बाहर तक घूमने लगी. दोनों बिल्लियों से मोहल्ले के बहुत सारे बच्चों को प्यार हो गया. वे सब बिल्लियों के बच्चों को गोद में उठा कर

खूब खिलाते थे. धीरे-धीरे एक महीना गुजर गया. दोनो बिल्लियाँ खूब ताकतवर हो गई और घर में चूहो का शिकार भी करना शुरू कर दिया.

एक दिन अचानक रात में दोनो बिल्लियाँ घर से निकल कर पता नही कहाँ चली गई. रात में और सुबह दोनो बिल्लियों को गोपाल और ओम् ने खूब ढूँढा. माँ ने गोपाल से कहा,बेटा तुम्हें उदास होने की कोई जरूरत नहीं. बिल्लियाँ चली गई तो सर से बला टल गयी. वह जहाँ भी होगी आराम से होगी. कई दिनों तक गोपाल बिल्लियों के अचानक गुम हो जाने से चिन्तित था. फिर वह सब कुछ भूल गया. पन्द्रह दिन बाद अचानक दोनो बिल्लियाँ गोपाल के घर आ कर म्याउं-म्याउं बोलने लगी. बिल्लियों की आवाज सुन कर गोपाल घर से बाहर आ कर देखा तो हैरान हो गया. वह दौड़ कर दोनो बिल्लियों को गोद में उठा कर उन्हें पुचकारनें लगा. दोनों बिल्लियाँ प्यार से गोपाल के हाथ को चूमने लगी. मानो कह रही हो अब हम यहाँ से कहीं नही जाएंगे. गोपाल आवाज दे कर बोला मम्मी जल्दी बाहर आओ देखो यह कौन आया है. गोपाल की आवाज सुन कर मम्मी बाहर आ कर देखी तो दोनों बिल्लियाँ गोपाल की गोद में खेल रही थी. यह देख कर मम्मी बोल पड़ी,लो आ गई न तुम्हारी दोनो बिल्लियाँ वापस. अब खुश हो न? बिल्लियों की वापस आने की खबर आग की तरह पूरे मोहल्ले में फैल गई. फिर क्या था, सारे बच्चें बिल्लियों को देखने के लिए आने लगे. सभी बच्चें बिल्लियों के साथ एक -एक सेल्फी ले कर फेसबुक पर पोस्ट करने लगे. गोपाल दोनो बिल्लियों को वापस पा कर बहुत खुश था.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

ईमानदार लकड़हारा

जंगल के पास एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था. वह मेहनती और ईमानदार था. हर सुबह वह अपनी कुल्हाड़ी लेकर जंगल में चला जाता. सुखी लकड़ियाँ काटकर बाजार में बेच देता था. इस तरह कमाए हुए पैसों से वह अपने परिवार का पालन करता था.उसका जीवन खुशी से व्यतीत हो रहा था.

वह हमेशा पेड़ से सूखी हुई शाखाओं को ही काटने का ख्याल रखता था, जिससे पेड़ को कोई नुकसान न हो. पेड़ काटने के बदले वह पौधे भी लगाता था जो कुछ वर्षों में पेड़ बन जाते थे.

एक दिन अपनी कुल्हाड़ी लेकर वह काम पर गया. तालाब के किनारे शाखाओं को काटने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया. तभी उसकी कुल्हाड़ी गलती से उसके हाथ से फिसलकर तालाब में गिर गई. वह पानी के नीचे अपनी कुल्हाड़ी ढूँढ़ने के लिए तालाब में उतर गया. उसने कुल्हाड़ी तलाश करने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मिली. वह असहाय एक पेड़ के नीचे बैठ गया. वह दुखी था कि उसने अपनी कुल्हाड़ी खो दी थी. वह सोचने लगा कि अब मेरा और मेरे परिवार का जीविकोपार्जन कैसे होगा. यह सोचकर वह रोने लगा.

उसके रोने की आवाज सुनकर तालाब की जलपरी ने बाहर आकर पूछा- तुम रो क्यों रहे हो? क्या हो गया है? लकड़हारे ने जलपरी को अपनी कहानी सुनाई. कहानी सुनकर जलपरी ने तलाब में डुबकी लगाकर एक जादुई कुल्हाड़ी निकाली जो चमकदार थी. पूछा- क्या यही है आपकी कुल्हाड़ी? लकड़हारे ने कहा नहीं-नहीं यह मेरी कुल्हाड़ी नही है.मेरी कुल्हाड़ी लोहे की है. जलपरी ने पुनः डुबकी लगाई और लोहे की कुल्हाड़ी दिखाई.

लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी देखकर खुशी से कहने लगा. हाँ देवी, यही मेरी कुल्हाड़ी है.जलपरी ने लकड़हारे की ईमानदारी से खुश होकर उसकी कुल्हाड़ी के साथ जादुई कुल्हाड़ी देते हुए कहा-यह कुल्हाड़ी सामान्य कुल्हाड़ी नहीं है, यह जादुई कुल्हाड़ी है.इससे जो भी माँगोगे उसे पूरा करेगी.

लकड़हारा जलपरी को धन्यवाद देते हुए घर चला गया. उसकी गरीबी दूर हो गई. वह अपने परिवार के साथ खुशी से जीवन व्यतीत करने लगा.

योगेश्वरी तम्बोली द्वारा भेजी गई कहानी

जलपरी

एक किसान था. उसकी पत्नी बहुत लालची थी. वह सदैव अपनी पड़ोसन की नकल करती थी. किसान अपनी पत्नी की इस आदत से परेशान था. एक दिन पत्नी अपने पति से सोने का हार लेने की जिद करने लगी. किसान के पास इतने पैसे नहीं थे कि सोने का हार ला सके, पर उसकी पत्नी ने कहा कि यदि तुम सोने की हार नहीं लाओगे तो मैं घर छोड़ के चली जाऊँगी. किसान बहुत परेशान होकर जंगल की ओर चल पड़ा. जंगल के रास्ते में एक तालाब था. तालाब से आवाज आई क्या हुआ, तुम बहुत परेशान लग रहे हो?

किसान ने जब देखा तो एक जलपरी दिखाई दी, उसने परी को सारी बात बताई. जलपरी ने कहा रुको मैं तुम्हें एक सोने की कुल्हाड़ी देती हूँ, तुम जो भी उससे माँगोगे वह तुम्हे मिल जाएगा. पर अधिक लालच मत करना नहीं तो यह कुल्हाड़ी वापस मेरे पास आ जायेगी. किसान कुल्हाड़ी लेकर अपने घर चला गया और अपनी पत्नी को सारी बात बताई,उसकी पत्नी बहुत खुश हुई और अपने लिये सोने का हार माँग लिया. अब उसका लालच दिनों दिन बढ़ता गया और लालच बढ़ने के कारण वह कुल्हाड़ी वापस जलपरी के पास चली गयी.

अब किसान की पत्नी बहुत पछताने लगी कि मुझे आवश्यकता से अधिक नहीं माँगना था. लालच नहीं करना चाहिये था. लालच का फल बहुत बुरा होता है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 तो	2			■	3 ख	■	4 ब	■	5
■		■	■	■		■	6 को	7	
■	8 मु		9			■	■		■
10 गु		■		■	■	■	11 बि		12
13		■	14 स		15			■	
	■	16 पै		■		■		■	
■	17 चु			18	■	■	■	19	
20 घा		■	■	21				■	■
22		■	■		■		■	23 ला	
■	24			■	25 क				■

बाएँ से दाएँ

1. तोतला 6. हल का प्रकार 8. मुस्कुराया 10. एक मीठा पदार्थ 11. खरीदी 13. अहाता 14. समय पर 16. पायल 17. महिला दूसरा विवाह 19. मत 20. व्यर्थ 21. रथ-यात्रा 22. मामा 23. रिश्ता, संबंध 24. खाली मैदान 25. तिलमिलाहट, छटपटाहट

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 अ	2 ज	र	3 ग	ज	4 र	■	5 अ	ला	6 ल
■	ऊं	■	वां	■	7 हा	ड़ा	■	■	क
■	8 ह	द	र	9 क	■	■	10 अं	जो	र
■	र	■	■	ह	■	11 सा	ध	■	ध
12 अं	■	13 ज	त	र	ख	त	र	■	क
14 उ	र	इ	■	म	■	■	15 झं	वा	र
हा	■	16 स	र	ह	ज	■	व	■	■
झ	■	न	■	र	■	17 स	र	18 ल	ग
उ	■	■	■	■	19 ता	ग	■	क	■
20 हा	ल	त	डो	ल	त	■	21 गो	ठा	न

ऊपर से नीचे

2. सर नीचे कर चलने वाला 3. ज्यादा सुखना या गरम हो 4. धन के फसल का कीड़ा 5. तीखा 7. पलास 9. सिरहाना 10. पैर का एक घाव 11. शादी-शुदा 12. वैसे 15. केला 16. पायल 17. मड़वाच्छादन के दिन का रस्म 18. एक दलहन/ दाल का नाम 20. धूप 23. पापकार्न

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।